यादों के साये

मधुकर शैदाई

यादों के साये

मधुकर चौधरी

जीने की आरज़ू है न मरने की तमन्ना ।
मेरा वुजूद भी किसी पत्थर की तरह है ।।

यादों के साये द्वारा मधुकर शैदाई

संस्करण : प्रथम

प्रकाशक : रचयिता स्वयं

प्रकाशन वर्ष : दो हज़ार दो

सर्वाधिकार : रचयिताधीन

मूल्य : अस्सी रुपये

आवरण : संजय गुप्त

सम्पर्क : खुटार रोड, गोला गोकरन नाथ
जनपद लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश
पिन कोड – 262802 फोन 05876-274313

Email : *Madhukar Shaidai2002@Yahoo.com*

उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : *मून कम्प्यूटर्स*
निकट अम्बेदकर पार्क (मून लाइट स्टूडियो)
गोला गोकरन नाथ जनपद लखीमपुर खीरी उ.प्र.
Ph. **05876 . 273086** (Resi.)

मुद्रक : *ऑफ़सेट इण्डिया मशकगंज लखनऊ*

श्रद्धेय डॉ. कुँअर बेचैन

रीडर एवं अध्यक्ष

(हिन्दी विभाग)

एम.एम.एच. कालेज

ग़ाज़ियाबाद उ.प्र.

को

सादर समर्पित

मधुकर शैदाई

आशीर्वचन

ग़ज़ल फ़ारसी ज़बान से छनकर उर्दू में आयी जिसको सबसे पहले हज़रत अमीर खुसरो ने पाला पोसा तथा खड़ी बोली और फ़ारसी के मिलन से ग़ज़ल का श्रृंगार किया।

ये सच है कि भाषा और विधा किसी की बपौती नहीं है हाँ मगर भाषा की संस्कृति से जानकारी रखना आवश्यक है। ग़ज़ल के सिलसिले में वली दकिनी से लेकर जिगर मुरादाबादी तक न जाने कितने नज़रयात के क़लमकार पैदा हुए और अपने–अपने स्तर तथा अपनी हैसियत से ग़ज़ल को सजाते–सँवारते रहे हैं। ग़ज़ल जब तक बराएअदब[१] रही और पढ़ने व सुनने वाले अदब के नोक–पलक से वाकिफ़ रहे तो ग़ज़ल की हैसियत काव्य विधाओं में सबसे प्रतिष्ठित रही। ऐसा नहीं कि उर्दू भाषा में सिर्फ़ मुसलमानों ने ही इस विधा के लिए अपनी कोशिश जारी रखी बल्कि हिन्दू,सिख,इसाइयों ने भी अपने ख़ूने जिगर से इसकी आबियारी[२] की है मिसाल के तौर पर 'ब्रजनरायन चकबस्त' और 'रघुपति सहाय फ़िराक गोरख़पुरी'से लेकर 'कृष्ण बिहारी नूर लखनवी' तक ग़ज़ल की साज श्रृंगार में ज़िन्दगी का हर लम्हा बिताये हुए हैं इधर हिन्दी लिपि में बहुत सारे लोग ग़ज़लें कहने लगे हैं लेकिन 'भारतेन्दु' से लेकर 'रंग जी' की डगर से हट कर नये प्रतीकों, नयी सोचों के साथ ग़ज़ल कह रहे हैं परन्तु ग़ज़ल की संस्कृति से नावाकफ़ियत[३] की बुनियाद पर उसकी अस्ल रुह, बज़्न और बह्र का ख़याल नहीं रखते हैं। कुछ इधर दो तीन दहाई से ग़ज़ल कहना एक फ़ैशन हो गया है और ग़ज़ल मुशायरों, कवि सम्मेलनों से श्रोताओं की मनोरंजन के निशाने पर आ गयी है और ये फ़र्क या अन्तर भाव और भावनाओं के बीच दीवार बनती जा रही है कि ये हिन्दी ग़ज़ल है वो उर्दू ग़ज़ल है। मैं समझता हूँ कि कोई भी विधा हो उसका नाम वैसे ही रहना चाहिए नामकरण से लाभ नहीं होगा । मेरे सामने 'मधुकर शैदाई' के संग्रह 'यादों के साये'की कापी है। इनकी ग़ज़लों को पढ़ने के बाद महसूस होता है कि इन्होंने ग़ज़ल की रवायत[४] का दामन बड़ी मज़बूती से पकड़ रखा है साथ ही नये इश्तेआरे[५] व अलामतों[६]को बड़े सलीके से शऊरी तौर पर प्रयोग करते हैं। ऐसा महसूस होता है कि ये अपने उस्ताद की शिक्षा–दीक्षा से बहुत ही मुतअस्सिर[७] हैं कहीं–कहीं इनके इश्क़िया अश्आर में

१.साहित्य के लिए २. सिचाई ३. अनभिज्ञता ४. पुरानी लीक पर ५. प्रतीकों ६. निशानात

बड़ी बरजस्तगी[8] का इज़हार है इनका ये ऐहतियात आगे चलकर एक पोख़ता और शगुफ़्ता शायर बनने में मददगार होगी।

मेरे ख़याल से ये आज के हिन्दी में ग़ज़लें कहने वालों से एक अपनी अलग डगर बनाते जा रहे हैं। मैं इनका कोई शेअ्र code करके अपने मज़मून को तावील नहीं देना चाहता पढ़ने वाले ख़ुद इनकी ग़ज़लें पढ़कर यह ज़रुर कह उठेंगें कि 'मधुकर शैदाई' एक साफ़–सुथरे ग़ज़लगो हैं। इनकी नयी ग़ज़लों का संग्रह 'यादों के साये' पढ़ने वालों को इनके साफ़–सुथरे ज़ेहन का अन्दाज़ा दिलाएगा और ख़ास व आम में पसन्द किया जायेगा। इनकी ज़ेहनी तरक़्क़ी और स्वास्थ्य के लिए शुभकामनायें ।

बलरामपुर
उत्तर प्रदेश

पद्मश्री बेकल उत्साही
पूर्व सांसद
५.८.२००२

7. प्रभावित 8. तुरन्त,फौरन

मेरे लायक़ शागिर्द 'मधुकर शैदाई' का पाँचवा शेअ्री मजमुआ–ए–कलाम आप हज़रात की नज़्र है । ग़ज़लियात क़तआत् व फुटकर अश्आर से आरास्ता इस शेअ्री मजमुए में सियासी, समाजी, मुआशी, सक़ाफ़ती व हुब्बुल वतनी का अक्सर–ओ–बेशतर अपनी फ़िक्री व फ़न्नी सलाहियत का बेहतरीन अन्दाज़ में मुज़ाहिरा किया है । इससे क़ब्ल इनके शेअ्री मजमुओं को नाज़रीन ने काफ़ी दाद ओ तहसीन से नवाज़ा जिसकी वजह से मौसूफ़ की काफ़ी हिम्मत अफ़ज़ाई हुई और यके बाद दीगरे शेअ्री मजमुओं की तख़लीक़ हुयी ।

क़ारईन से इलतमास है कि इस मजमुए को भी अपनी दाद से नवाज़ें ताकि अगली तख़लीक़ भी इससे बेहतर अन्दाज़ में आपकी नज़्र हो । ख़ुदा से दोआ है कि 'मधुकर शैदाई' रोज़े अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी की नयी नयी राहों पर गामज़न रहकर जहान–ए–अदब में आला मुक़ाम हासिल करें – आमीन ।

आपका
अल्ला बख़्श क़ुरैशी 'नाकाम गोलवी'

पश्चिमी दीक्षिताना
गोला गोकरन नाथ
खीरी उ०प्र०

छोटी काशी के जयशंकर प्रसाद : मधुकर शैदाई

छोटी काशी के सुकवि मधुकर शैदाई का नाम स्मृति में आते ही मुझे छायावाद के प्रर्वत्तक कवि स्व. श्री जयशंकर प्रसाद की याद आ जाती है । दोनों ही कवियों में रचनाधर्मिता एवं युग की दृष्टि से भले ही कोई साम्य न हो किन्तु वृत्ति और प्रवृत्ति तथा स्थान की समानता निश्चित ही हमारे कथन को बल प्रदान करती है । प्रसाद जी का व्यवसाय तम्बाकू का था और मधुकर शैदाई का कुछ वैसा ही किराना स्टोर का है । शारीरिक कद–कांठी तथा स्वभाव की मृदुलता भी दोनों साहित्य सेवियों में एकरसता का भाव उत्पन्न करती है । प्रसाद जी काशी के वासी थे और मधुकर शैदाई जी छोटी काशी (गोला गोकरन नाथ) के ।

मधुकर शैदाई हमारे नगर के ऐसे दैदीप्यमान काव्य–नक्षत्र हैं जिन्होंने अपने काव्यालोक से नगर ही नहीं अपितु पूरे साहित्य जगत को प्रकाशित किया है । अभी तक शैदाई जी की चार काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'आवाज़ हिन्दुस्तान की', ग़ज़ल एवं मुक्तक संग्रह, 'ग़ज़ल के आँचल पर' ग़ज़ल संग्रह तथा 'दर्पन बोल उठा' ग़ज़ल संग्रह हैं । मधुकर शैदाई को सर्वाधिक चर्चित एवं यश दिलाने वाली कृति "देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर" की उक्ति को सार्थक करने वाली कृति 'अधूरी ग़ज़ल' आकार प्रकार में भले ही उनकी अन्य कृतियों से पीछे हो किन्तु कीर्तिमान स्थापित करने में सबसे अग्रणी रही है । यह कृति कई मायनों में अपना अलग परिवेश रखती है । इस लघु कृति में पाँच सौ पन्द्रह अश्आर (शेअ्र) हैं किन्तु ग़ज़ल की संख्या एक ही है "लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स" ने इस कृति को ग़ज़ल के भारतीय इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी ग़ज़ल लिखे जाने का प्रमाण–पत्र दे दिया है । मधुकर शैदाई ने वर्ष २००३ के "लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स" में सबसे बड़ी ग़ज़ल लिखने का कीर्तिमान स्थापित कर लिया है । बात यहीं समाप्त नहीं होती है एक ग़ज़ल में विश्व के इतिहास में भी इतने अश्आर लिखे जाना पहली बार ही हुआ है । अब इस विषय में शायद अथवा सम्भवतः के लिए कोई स्थान शेष नहीं है क्योंकि ग़ज़ल लिखे जाने की सीमा भारतीय सरहद तक ही सीमित नही है ग़जल ऐसी शमा है जिसके परवाने सारी दुनिया में पाये जाते हैं । विश्व परिदृश्य में यदि 'अधूरी ग़ज़ल' के स्थान का आकलन किया जाये तो मधुकर शैदाई विश्व के इकलौते ऐसे कवि हैं जिन्होंने पाँच सौ पन्द्रह अश्आर की एक ग़ज़ल लिखने का कारनामा कर दिखाया है इसकी पुष्टि की विश्व के अनोखे रिकार्डों को संग्रहीत करने वाली पुस्तक "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स" ने ।

गिनीज बुक में साहित्य–क्षेत्र के अन्तर्गत सबसे बड़ी ग़ज़ल का अभी तक कोई रिकार्ड दर्ज नहीं हुआ है । इस बात का महत्व तब और अधिक बढ़ जाता है जब ग़ज़ल के हज़ारों वर्ष पुराने इतिहास को ध्यान में रखकर मधुकर शैदाई की उक्त कृति को देखा जाये। अत: 'मधुकर शैदाई' कृत 'अधूरी ग़ज़ल' विश्व की सबसे बड़ी ग़ज़ल होने का सम्मान भी प्राप्त करती है । उक्त कृति का शीर्षक और अधिक रोमांच पैदा करता है एक ग़ज़ल जिसमें पाँच सौ पन्द्रह अश्आर किन्तु फिर भी अधूरी है ?

मधुकर शैदाई ने अपनी ग़ज़लों से जहाँ श्रृंगार का मकरन्द बिखेरा है वहीं राष्ट्रीय एकता के स्वर को भी मुखरित किया है । साम्प्रदायिक सौहार्द तो प्राय: उनकी ग़ज़लों का मुख्य विषय रहा है । आज की राजनीति और भ्रष्टाचार के प्रति भावाभिव्यक्ति करते हुए कवि की क़लम कभी–कभी इन्क़लाबी बन जाती है किन्तु ग़रीबी, दलितोद्धार तथा समाज की अन्य बुराइयों पर प्रकाश डालते समय कवि का हृदय कहीं आक्रोश, कहीं क्षुब्धता तो कहीं करुणा से ओत–प्रोत दिखाई देता है ।

मधुकर शैदाई की प्रकाश्य कृति 'यादों के साये' उपर्युक्त भावाभिव्यंजना की परिचायक है । इस कृति में इक्यावन ग़ज़लें, छप्पन मुक्तक एवं क़त्आत तथा एक सौ पाँच फुटकर अश्आर को संग्रहीत किया गया है । शिल्प की दृष्टि से इस संग्रह की प्रत्येक ग़ज़ल पुष्ट और सुस्पष्ट है । हिन्दी–उर्दू की गंगा–जमनी धारा भाषा के लालित्य को द्विगुणित करती है । कवि की मान्यता है कि ग़ज़ल की पहचान किसी भाषा विशेष से न होकर अपितु अपने शिल्प के कारण है इसलिए वह पहले ही कह चुका है –

मुझको बाँटो नहीं ज़ुबानों में ।
मैं ग़ज़ल हूँ ग़ज़ल ही रहने दो ।।

मधुकर शैदाई अपने कैंड़े के अनोखे ग़ज़लकार हैं । साहित्य–जगत में एक विशेष स्थान रखते हैं। आपने अपनी काव्य–प्रतिभा से काव्य–जगत को आकर्षित किया है। ख़ास तौर से बीसवीं सदी का अन्तिम दशक उनकी काव्य प्रगति का द्योतक रहा है, उन्होंने साहित्य–क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं । नि:संदेह आने वाला समय 'मधुकर शैदाई' के प्रति मेरी इन पंक्तियों को अवश्य याद करेगा–

तुम भी करोगे फ़ख़्र कभी अपने आप पर ।
'मधुकर' को हमने देखा है कितने क़रीब से ।।

डॉ वेद प्रकाश अग्निहोत्री 'वेद'
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
गन्ना किसान महाविद्यालय
बहादुर नगर, मोहम्मदी (खीरी)

भूमिका

दो तीन वर्ष पूर्व जनपद लखीमपुर खीरी में सेवा काल के दौरान मेरी मुलाक़ात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिसे देखकर एक साहित्यिक आकर्षण खुद ब खुद पैदा हुआ और बातचीत के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि जनाब 'मधुकर शैदाइ' साहब ग़ज़लों के बेहतरीन शायर हैं और गोला कसबे में रहते हैं। आपसे कुछ अश्आर और ग़ज़लें सुनी तो उनकी क़द्र और बढ़ गयी। कुछ दिनों बाद 'मधुकर जी' की छपी हुई किताबें 'आवाज़ हिन्दुस्तान की', 'ग़ज़ल के आँचल पर', 'अधूरी ग़ज़ल' व 'दर्पन बोल उठा' पढ़ने को मिलीं। आपके कलाम पर कुछ लिखने से पहले पुस्तकों के नामकरण पर भी विचार करना आवश्यक है जिससे शायर के रहस्यमय विचारों को समझा जा सकता है। कहीं पर सम्पूर्ण आँचल मिल रहा है कहीं पर अधूरी ग़ज़ल, कभी हिन्दुस्तान की आवाज़ सुनाई पडती है तो कहीं दर्पन बोलने लगता है। अब मैं इलाहाबाद में कार्यरत हूँ और शैदाई जी गोला में, किन्तु पत्र व्यवहार एवं टेलीफ़ोन के माध्यम से शैदाई जी सम्पर्क बनाये रहते हैं, यह उनकी महानता है कि अपनी पाँचवी पुस्तक 'यादों के साय' की भूमिका हेतु पाण्डुलिपि मेरे पास इलाहाबाद भेजी। इस पाण्डुलिपि को पाते ही मेरे चारों ओर यादों के साये घिरने लगे और पुरानी यादें नयी होनें लगीं साथ ही लखीमपुर के कवियों और शायरों की भी यादें उभर आयीं। वास्तव में लखीमपुर के हिन्दी व उर्दू दोनों साहित्यकारों ने मुझे बहुत स्नेह दिया, जिसे भुलाया नहीं जा सकता ।

इस संग्रह में ग़ज़लें, क़तआत् और मुतफ़र्रिक अश्आर अंकित हैं शायर ने प्रत्येक पृष्ठ पर कठिन शब्दों का अर्थ भी नीचे अंकित कर दिया है जिससे पाठकों को अधिक सुविधा मिलेगी। पहली ग़ज़ल का मतला अर्थात् दो पंक्तियाँ स्वयं कवि की भावनाओं और विचारों पर प्रकाश डालती हैं –

- हो फ्रेम में जो क़ैद वो तस्वीर नहीं हूँ ।
  लग जाये जिसमें ज़ंग वो शमशीर नहीं हूँ ।।

जिस शायर के संग्रह में दर्पन बोलता हो भला उसकी तस्वीर फ्रेम में क़ैद होकर कैसे रह सकती है और जिसके संग्रह में आवाज़ हिन्दुस्तान की मौजूद हो भला उसकी शमशीर में ज़ंग कैसे लग सकती है। इस ग़ज़ल में शायर ने 'ग़ालिब', 'नज़ीर', 'वली' और 'मीर' की बुलन्दी तस्लीम करते हुए अपना स्थान भी इस प्रकार स्पष्ट किया है –

- कुछ शेअ्र दोस्त मेरे भी हैं दाद के क़ाबिल ।
  गो ग़ालिबो, नज़ीर, वली, मीर न हीं हूँ ।।

वक़्त की नब्ज़ पर हाथ रखते हुए शायर ने भारत की पुरानी एकता और सभ्यता को इस प्रकार याद दिलाया है –

- कड़ियों में एकता की जो सदियों से बँधी है ।
  पल भर में टूट जाये वो ज़ंजीर नहीं हूँ ।।

कवि राष्ट्र की पुरानी तस्वीर को याद दिलाते हुए भारत की अखण्डता को क़ायम रखने हेतु अपने संकल्प को इस प्रकार कहता है –

- तारीख़ याद है अभी तक़्सीमे वतन की ।
  बँट जाये जिससे देश वो तक़रीर नही हूँ ।।

शायर ने लम्बी–लम्बी तक़रीर {भाषण} वालों को जागृत भी किया है कि हमारी तस्वीर बाँटने वाली न होकर जोड़ने वाली होनी चाहिए ।

इश्क़ की ग़ह में ठोकर खाना भी आवश्यक है, तभी इश्क़ का मज़ा मालूम होता है –

- शीशा–ए–दिल गिरा खेल ही खेल में ।
  ये मिला है सिला खेल ही खेल में ।।
- इश्क़ उनसे हुआ खेल ही खेल में ।
  दिल का गुलशन लुटा खेल ही खेल में ।।
- कुछ धुंआँ सा उठा खेल ही खेल में ।
  घर किसी का जला खेल ही खेल में ।।

इश्क़ की बातें करते–करते एहले दुनिया की सियासत और उससे होने वाली तबाही याद आने लगती है –

- हैं उजाड़े सियासत ने कितने चमन ।
  गाँव मेरा लुटा खेल ही खेल में ।।
- कुर्सियों की बदौलत खिले थे ये गुल ।
  देश अपना बँटा खेल ही खेल में ।।

इस परिवर्तनशील और नश्वर संसार की दशा देख कर शायर कह उठता है –

- ये भी इक शहर था नामवर देखिए ।
  उजड़े–उजड़े से ये बामोदर देखिए ।।

प्रेम का वातावरण उत्पन्न करने हेतु शायर ने कितना अच्छा सुझाव दिया है –

- सदियों की ख़ताओं को लम्हों मे भुला दीजे ।
  अब ज़ेह्न की तलख़ी को लिल्लाह मिटा दीजे ।।
- जो तुमने उजाड़ा है वह गाँव बसा दीजे ।
  हर घर में मोहब्बत की इक शम्मा जला दीजे ।।

लेकिन उसकी बातों का कोई असर नहीं होता, और किसी ओर से मेल मिलाप हेतु कोई प्रयास नज़र नहीं आता तो शायर के तेवर पर बल आ जाते हैं और कह उठता है –

- 'मधुकर' जो ग़रीबों को पहुँचा न सके राहत ।
  तो ऐसी हुकूमत का क़ानून जला दीजे ।।

हुस्न की एहमियत और अफ़ादियत का इस तरह बयान किया है –

- हुस्न तो इश्क़ का है खुदा दोस्तो ।
  तुमने क्यों कह दिया बेवफ़ा दोस्तो ।।

वक़्त के उतार चढ़ाव, देश में होने वाले हादसात पर शायर हर वक़्त नज़र रखते हुए कह उठता है कि –

- हादसा हो गया है फिर कोई ।
  ग़मज़दा ख़ासो आम लगता है ।।

वास्तव में मनुष्य की ज़ुबान एक महत्वपूर्ण अंग है जिसे संभालने के लिए शायर ने किस प्रकार समझाया है –

- इस जुबाँ को सँभालिए 'मधुकर' ।
  दुश्मनों से भी काम लगता है ।।

मधुकर जी अपनी पहचान और अपने अस्तित्व को स्वतंत्र बनाये रखने हेतु इस प्रकार एक मक़्ते में कहते हैं कि –

- ख़त्म खुद अपना निशाँ उसने कर लिया 'मधुकर' ।
  जब भी दरिया ने समन्दर से दोस्ती कर ली ।।

इसी ग़ज़ल में मोहब्बत के रिश्ते में आती हुई कमी को देखकर फ़रमाते हैं –

- आदमी भूल गया अपने ख़ून का रिश्ता ।
  इसलिए अपनों ने अपनों से दुश्मनी कर ली ।।

हर शुभ स्थान और शुभ अवसर पर दीप जलाने की रस्म हमारे देश में सदैव रही है फिर भला उल्फ़त का जाम लेते समय यह पुण्य काम कैसे छूट सकता है। शायर कहता है –

- नाम उल्फ़त का जब भी लिया कीजिए ।
  पहले रौशन दिलों में दिया कीजिए ।।

इश्क़ की मरियादा और नियमों के पालन करने हेतु शायर कहता है कि –

- ज़ब्त के दायरे में रहा कीजिए ।
  इश्क़ में दर्दे दिल भी सहा कीजिए ।।

अपने महबूब से आस्था और समर्पण की भावना को इस प्रकार अंकित किया है कि –

- छोड़ कर संगे दर अब न जाऊँगा मैं ।
  बद्दोआ कीजिए या दोआ कीजिए ।।

माशूक़ से बिछड़ना, जुदाई या हिज्र का यह लम्हा ज़िन्दगी में कितना कष्टदायक होता है । शायर अपने भाव को यूँ स्पष्ट करता है कि –

- 'मधुकर' बिछड़ के यार से बिछड़ा है जहाँ से ।
  ये दिन खुदा न और किसी को भी दिखाये ।।

परदे में रहने वाले माशूक़ से अपना अनुरोध इस प्रकार शायर कर रहा है –

- दीवाना हो गया हूँ मैं पहले ही आपका ।
  अब रस्म तोड़ दीजिए शर्मो हिजाब की ।।

देश की प्रतिदिन बिगड़ती हुई हालत और उसके प्रति लापरवाही के कारण भारी छति होने से दुखी होकर शायर कह उठता है –

- दीवार तो मख़दूश बहुत दिन से खड़ी थी ।
  कुछ लोग ये कहते हैं कि बारिश ने गिरा दी ।।

यहाँ पर शायर ऐसी शराब का ज़िक्र कर रहा है जो कि बड़े नसीब वालों को ही मयस्सर होती है –

- उतरा ही नहीं उसका नशा आज भी 'मधुकर' ।
  मयख़ाने में साक़ी ने जो आँखों से पिला दी ।।

मधुकर जी के क़तआत् में भी ज़िन्दगी की चमक दिखाई देती है। ग़मों से खेलने का हौसला मिलता है, आप कहते हैं कि –

- वो ख़यालों में जब भी आया है ।
  दिल का हर दाग़ जगमगाया है ।।
  ज़िन्दगी का हिसाब मत पूछो ।
  कितना खोया है कितना पाया है ।।

अपने देश में आये दिन होने वाले उन्मादी फ़सादात पर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए आँखों देखा हाल यूँ बयान किया है –

- उठ रहा हर गली में धुआँ देखिए ।
  हर तरफ़ जल रहे हैं मकाँ देखिए ।।
  राम और कृष्ण के देश में किस क़दर ।
  आज रोता है अम्नो अमाँ देखिए ।।

शैदाई साहब वफ़ा के पुजारी, वफ़ा के पक्षधर और वफ़ादारों की तलाश करने वाले अच्छे इन्सान भी हैं। दुनिया की तमाम मुसीबतों और परेशानियों के बावजूद अम्नो अमाँ का परचम बुलन्द करते हुए लिखते हैं –

- सबको लगी है धुन यहाँ फ़िक्र–ए–मुआश की ।
  तनहा निकल पड़ा हूँ मैं तेरी तलाश में ।।
  दुनिया की फ़िक्र इश्क़ें बुताँ जामो मयकदा ।
  सारे जहाँ के दर्द हैं मेरी तलाश में ।।

'मधुकर शैदाई' साहब की शायरी मात्र दिल बहलाने के लिए नहीं है, कला और दर्शन भी मिलता है। अच्छी सोच है और दिल का दर्द बड़े अच्छे अन्दाज़ में प्रकट किया गया है। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि शैदाई साहब की शायरी में और निखार प्रदान करे जिससे पाठकों को बराबर लाभ मिलता रहे । शुभ कामनाओं सहित ।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी
इलाहाबाद परिक्षेत्र, इलाहाबाद (उ.प्र.)

मक़बूल जायसी
जायस, रायबरेली

दो शब्द

कविता एक साधना है एक तपस्या है। कविता मनुष्य को एक नई दिशा प्रदान करती है। कविता लिखने की क्षमता हर एक में नहीं होती, माँ वीणा–पाणि की विशेष कृपा से इसकी प्राप्ति होती है । कविता केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है। इसका सही मायने में उपयोग करना हमारा परम कर्तव्य बन जाता है जैसे कि आज कुछ कवि व शायर सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए मंच पर स्तरहीन कवितायें पढ़कर कुछ समय के लिए वाहवाही तो लूट सकते हैं, धन की भी प्राप्ति कर सकते हैं मगर क्या यह धन व यश स्थाई होगा ? इसलिए आज कवि व श्रोता दोनों का यह दायित्व बन जाता है कि साहित्य के गिरते हुए स्तर को ऊँचा उठाने का संकल्प लें ताकि आने वाली पीढ़ी का सही मार्गदर्शन हो सके।

काव्य एक अथाह सागर है जिसकी थाह पाना मुश्किल ही नहीं नामुम्किन भी है । इस पृथ्वी पर न जाने कितने शायर व कवि आये लेकिन इस काव्य–सागर की थाह नहीं पा सके फिर भला मेरी औक़ात ही क्या ? मैं अपनी पूर्व प्रकाशित कृतियों में भी कह चुका हूँ कि मैं अभी तालिब इल्म (विद्यार्थी) ही हूँ । पृथ्वी पर हर प्राणी अपूर्ण है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता केवल ईश्वर ही पूर्ण है –

ईश्वर ही सम्पूर्ण है बाक़ी सभी अपूर्ण ।
और नहीं है दूसरा कोई जग में पूर्ण ।।

मनुष्य सदा अपने ही यादों के साये से घिरा रहता है और कुछ साये ऐसे भी होते हैं जिन्हें वह चाह कर भी अपने से अलग नहीं कर पाता । उन्हीं सायों की याद में 'यादों के साये' नामक काव्य–संग्रह आपके हाथों में इस विश्वास के साथ सौंप रहा हूँ कि काव्य–संग्रह का यदि एक शेअ्र भी आपके मन को छू गया तो मैं अपनी काव्य–साधना को सफल समझूँगा । आपका आशीर्वाद ही नई कृति को जन्म दे सकता है जो मेरी काव्य–यात्रा का अगला पड़ाव हो सकता है । सर्वप्रथम मैं अपने उस्ताद जनाब अल्ला बख़्श कुरैशी 'नाकाम गोलवी' के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि जिनके स्नेह एवं आशीष से मैं काव्य–साधना के इस पड़ाव तक पहुँचा । कबीर दास के शब्दों में –

यह तन विष की वल्लरी गुरु अमृत की खान ।
सीस दिए जो गुरु मिलै तो भी सस्ता जान ।।

इसी श्रृंखला में मैं उस महान शक्सियत को जो हिन्दुस्तानी ज़बान में गीतों का राजकुमार व ग़ज़लों का बादशाह कहा जाता है जिसकी ज़बान में हिन्दी का सोज़ व उर्दू का साज़ [illegible] फ़ारसी की चाशनी और मीर के बोल में

रसखान की आवाज़ है ऐसे उस्ताद शायर मो॰ ॰ पदम् श्री बेकल उत्साही का शुक्रगुज़ार हूँ कि जिन्होंने मेरी कृति को अपना आशीर्वाद प्रदान किया साथ ही ग़ज़ल के शनासा जनाब मक़बूल जायसी तथा डॉ. वेद प्रकाश अग्निहोत्री 'वेद' के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि जिन्होंने कृति की भूमिका लिखकर कृति को अपने विचारों से गौरवान्वित किया ।

इसी क्रम में मैं अपने प्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय श्रीयुत विष्णुकांत शास्त्री का विशेष आभारी हूँ कि जिन्होंने मेरी कृतियों 'आवाज़ हिन्दुस्तान की' एवं 'ग़ज़ल के आँचल पर' को गत वर्ष लोकार्पित कर मुझ नाचीज़ की हौसला अफ़ज़ाई की तथा प्रदेश सरकार का भी आभारी हूँ कि जिसके आर्थिक सहयोग से मेरी कृतियाँ प्रकाशित होकर आपके कर कमलों तक पहुँच सकीं ।

इसके पश्चात श्री विनोद चन्द पाण्डेय 'विनोद' (I.A.S.) पूर्व निदेशक हिन्दी संस्थान उ.प्र., डॉ. ओ.पी. मिश्र व पं. सियाराम मिश्र (गोला), श्री चन्द्रसेन विराट (इन्दौर), डॉ. गणेशदत्त सारस्वत (सीतापुर), जनाब मुश्ताक़ लखीमपुरी, श्री सुमन दुबे, व जनाब अंसार कम्बरी (कानपुर) डॉ. रोहिताश्व अस्थाना (हरदोई), डॉ. बेकरां आलमी (लखनऊ), डॉ. ग़ाफ़िल अन्सारी (संसारपुर), श्री कमल किशोर वर्मा 'कमल हातवी' (P.P.S.) (लखनऊ), जनाब कुतुब रायबरेलवी ,पं. देव नरायन दीक्षित (कानपुर), श्री लवकुश दीक्षित (सिधौली), श्री राजेन्द्र वर्मा व श्री रवीन्द्र कुमार 'राजेश' (लखनऊ), श्री सत्यधर शुक्ल (मन्यौरा), श्री ओम नीरव (मोम्मदी) तथा श्री देवेन्द्र देव पूरनपुर का भी आभारी हूँ ।

तत्पश्चात् नगर के डॉ. के. बी. त्रिपाठी 'राही', डॉ. अनंत राम मिश्र, ख़ान अज़ीज़ गोलवी, श्री राम कुमार गुप्त, श्री बेनी राम 'अंजान', श्री जगदीश प्रसाद त्रिवेदी 'प्रेमी' ,श्री सुशील कुदेशिया, श्री नन्दी लाल 'निराश' श्री कान्त तिवारी 'कान्त', श्री रमेश पाण्डेय 'शलभ', श्री बेदिल भारती एवं इष्ट मित्रों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ ।

अन्त में मैं अपने पिता स्वर्गीय श्री प्यारे लाल गुप्त को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ –

तथा माता श्रीमती कलावती के चरणों में नमन करते हुए अनुज श्री छोटे लाल गुप्त व भान्जे श्री संजय कुमार गुप्त को भी धन्यवाद देता हूँ कि जिनका सहयोग सदैव ही मेरी काव्य–यात्रा में सराहनीय रहा है ।

मधुकर शैदाई

संकेतिका

क्रमांक	ग़ज़ल	पेज नं.
1.	हो फ्रेम जो क़ैद वो तस्वीर नहीं हूँ.....	17
2.	उसका ऊँचा मुक़ाम लगता है	18
3.	इश्क़ में देखिए किसने ये आख़िरी कर ली	19
4.	जब कभी आप सजदा किया कीजिए	20
5.	इश्क़ उनसे हुआ खेल ही खेल में.....	21
6.	इतने बड़े जहान में तनहा ही रह गया	22
7.	नाज़ुक कली में आज वो रंगत नहीं रही	23
8.	आज दिल बेक़रार है यारो	24
9.	हो गया ख़त्म सिलसिला उनसे	25
10.	आइना दिल का सजा लेने दो	26
11.	हुस्न का ये तिलस्मी नगर देखिए	27
12.	सदियों की ख़ताओं को लम्हों में भुला दीजे	28
13.	हुस्न तो इश्क़ का है ख़ुदा दोस्तो	29
14.	क्या पता किस मोड़ पर कब सामना हो जायेगा.....	31
15.	वो सँवर कर निकलने लगे	32
16.	जिस घड़ी उनकी नज़र मुझपे ठहर जायेगी	33
17.	मेरे वुजूद में तो कोई रहनुमा भी था	34
18.	उठ के वो महफ़िल से जब जाने लगे	35
19.	लाशों का शह्र-शह्र में व्यापार हो गया	36
20.	मेरे अश्कों से मेरा मुक़द्दर बना	37
21.	क्यों ज़िद ये कर रहे हो कि मैं भी यही कहूँ	38
22.	मय नज़र से पिला गया कोई	39
23.	कभी याद उनकी भुलाई नहीं	40
24.	यारों ने जब भी तंज़ के हैं तीर चलाये	41
25.	कुछ रह गयी न फ़िक्र अज़ाबो सवाब की	42
26.	क्या जुर्म किया मैंने था जो मुझको सज़ा दी	43

27. मेरे महबूब का कोई सानी नहीं 44
28. इश्क़ को आप दिल में बसा लीजिए 45
29. अब उनसे मुलाक़ात का ये वक़्त नहीं है 47
30. हो गयी सोच कर आँख गीली मिरी 48
31. हर दफ़ा चोट खायी है दिल पर 49
32. उस बुत के ग़म में सुबूह हुयी शाम हो गयी 50
33. फूल भी अब महकते नहीं हैं 51
34. कुर्सी के दाँव-पेंच में उलझाये हुए हैं..... 52
35. इस बाग़ की मिट्टी से जिसे प्यार नहीं है 53
36. कश्मीर हम हैं खाते क़सम तेरी शान की 54
37. किसकी अदा ये सूरते घनश्याम हो गयी 55
38. जबसे तुम्हारे इश्क़ का एहसास हो गया 56
39. एक था मनचला 57
40. है अज़ल से चला 58
41. सबके ऊपर 59
42. रमता जोगी बहता पानी 60
43. मौसम में तबदीली आयी 61
44. फ़िक्र में जब तक यार न होगा 62
45. प्यार में हमने ऐसा मंज़र देखा है 63
46. अब करिश्मे भी नये कुछ हो रहे हैं 64
47. जाने कितनी सदियाँ गुज़री अपनी इक तनहाई में..... 65
48. मैंने जिसको अपना समझा वही छुपाये ख़ंजर निकला 66
49. निगाहे नेक में हर पल ख़ुदा का वास होता है 67
50. जिसने मुझको इस दुनिया में जीने का अधिकार दिया ... 68
51. वही बड़ा इन्सान यहाँ जो छोटों का सम्मान करे 69
क़तआत् एवं मुक्तक 70–84
मुतफ़र्रिक अश्आर (फुटकर शेअ्र) 85–96

ग़ज़लियात

हो फ्रेम में जो क़ैद वो तस्वीर नहीं हूँ ।
लग जाये जिसमें ज़ंग वो शमशीर नहीं हूँ ।।

कुछ शेअ्र दोस्त मेरे भी हैं दाद के क़ाबिल ।
गो ग़ालिबो[1], नज़ीर[2], वली[3], मीर[4] नहीं हूँ ।।

कड़ियों में एकता की जो सदियों से बँधी है ।
पल भर में टूट जाये वो ज़ंजीर नहीं हूँ ।।

तारीख़ याद है अभी तक़्सीमे वतन की ।
बँट जाये जिससे देश वो तक़रीर नहीं हूँ ।।

है रोशनी चमन के चिराग़ों में मुझी से ।
आकर चली जो जाये वो तनवीर[5] नहीं हूँ ।।

मैं तो खुली किताब हूँ दर्पन की तरह दोस्त ।
सरमायादार की कोई जागीर नहीं हूँ ।।

यारो मुझे नहीं है नुजूमी[6] की ज़रुरत ।
उलझे हुए मैं ख़्वाब की ताबीर[7] नहीं हूँ ।।

□

१. मिरज़ा असदउल्ला खाँ ग़ालिब, २. नज़ीर अकबराबादी
३. वली दकिनी ४. मीर तक़ी मीर ५. चमक ६. नक्षत्र ज्ञानी ७. स्वप्न फल

२

उसका ऊँचा मुक़ाम[1] लगता है ।
हुस्न का वो इमाम[2] लगता है ।।

उसके होठों पे आज फिर यारो ।
कोई ताज़ा पयाम लगता है ।।

ख़ास मेहमान आने वाला है ।
शह्र में इन्तज़ाम लगता है ।।

जाम होठों से जब लगाता हूँ ।
वह हसीं हमकलाम लगता है ।।

उन उसूलों की बात क्या करिये ।
जिनका इन्साँ ग़ुलाम लगता है ।।

अब जो शोले हवा उगलती है ।
वक़्त का इन्तक़ाम लगता है ।।

हादसा हो गया है फिर कोई ।
ग़मज़दा ख़ासो आम लगता है ।।

क्या है ये आख़िरी सफ़र की हद ।
सूना-सूना मुक़ाम लगता है ।।

इस ज़ुबाँ को सँभालिए 'मधुकर' ।
दुश्मनों से भी काम लगता है ।।

□

१. स्थान २. अग्रसर , पेशवा

इश्क़ में देखिए किसने ये आख़िरी कर ली ।
आशियाँ[1] अपना जला कर के रोशनी कर ली ।।

आज कुछ बात है यारो ज़रुर महफ़िल में ।
ऐसा लगता है कि साक़ी ने मयकशी कर ली ।।

आदमी भूल गया अपने ख़ून का रिश्ता ।
इसलिए अपनों ने अपनों से दुश्मनी कर ली ।।

नेक इन्सान कभी जब ज़मीन पर आया ।
अर्श[2] ने फ़र्श[3] को तब झुक के बन्दगी कर ली ।।

ख़त्म ख़ुद अपना निशाँ उसने कर लिया 'मधुकर' ।
जब भी दरिया ने समन्दर से दोस्ती कर ली ।।

१. घर , घोंसला २. आसमान ३. धरती

४

जब कभी आप सजदा किया कीजिए ।
प्यार के वास्ते भी दोआ कीजिए ।।

नाम उल्फ़त का जब भी लिया कीजिए ।
पहले रोशन दिलों में दिया[1] कीजिए ।।

ज़ब्त के दायरे में रहा कीजिए ।
इश्क़ में दर्दे दिल भी सहा कीजिए ।।

छोड़ कर संगे दर अब न जाऊँगा मैं ।
बद्दोआ कीजिए या दोआ कीजिए ।।

आप आयें न आयें रज़ा आपकी ।
ख़त-किताबत मगर कर लिया कीजिए ।।

आपकी मेरी आँखों में तस्वीर है ।
अपना चेहरा इधर तो ज़रा कीजिए ।।

बज़्म में जब भी हो ज़िक्र परवानों का ।
तज़किरा[2] मेरा भी कर लिया कीजिए ।।

मैं तो सौ जाँ से कुर्बान हूँ आप पर ।
अब वफ़ा कीजिए या जफ़ा कीजिए ।।

सोचिए क़ब्ल दिल में नशेबो-फ़राज़[3] ।
गर नया काम यारो किया कीजिए ।।

क्यों नहीं आये वो चाँदनी रात में ।
चाँद-तारों से उनका पता कीजिए ।।

जलवा-ए-हुस्न[4] से सब ही बेहोश हैं ।
होश की अब न 'मधुकर' दवा कीजिए ।।

□

१. दीपक २. चर्चा ३. ऊँच-नीच ४. हुस्न का प्रदर्शन

५

इश्क़ उनसे हुआ खेल ही खेल में ।
दिल का गुलशन लुटा खेल ही खेल में ।।

शीशा-ए-दिल गिरा खेल ही खेल में ।
ये मिला है सिला[1] खेल ही खेल में ।।

कुछ धुआँ सा उठा खेल ही खेल में ।
घर किसी का जला खेल ही खेल में ।।

हैं उजाड़े सियासत ने कितने चमन ।
गाँव मेरा लुटा खेल ही खेल में ।।

कुर्सियों की बदौलत खिले थे ये गुल ।
देश अपना बँटा खेल ही खेल में ।।

रोज़ मरना औ जीना तिरे इश्क़ में ।
जान से मैं गया खेल ही खेल में ।।

कह गया ता क़यामत न आयेंगे हम ।
हो गया वह ख़फ़ा खेल ही खेल में ।।

हसरतें जब कभी सू-ए-मंज़िल[2] चलीं ।
लुट गया क़ाफ़िला खेल ही खेल में ।।

फूल ने हँस के आग़ोश[3] मे ले लिया ।
क़ैद 'मधुकर' हुआ खेल ही खेल में ।।

□

१. बदला २. मंज़िल की तरफ़ ३. गोद

इतने बड़े जहान में तनहा ही रह गया ।
आग़ोश[१] में नदी के मैं प्यासा ही रह गया ।।

जिस ख़त में मैंने हर्फ़े तमन्ना लिखा कभी ।
उसका जवाब दोस्तो आता ही रह गया ।।

यूँ तो रहा वो मुझसे बहुत देर हम कलाम[२] ।
मेरी ज़ुबाँ पे हर्फ़े तमन्ना ही रह गया ।।

कुछ लोग जामे-जम[३] से तो सैराब[४] हैं मगर ।
इक अपने पास सब्र का प्याला ही रह गया ।।

साथी थे जितने राह में रूख़सत हुए सभी ।
अब साथ में फ़क़त मिरा साया ही रह गया ।।

मैं जा रहा हूँ लौट के मिलना मुहाल[५] है ।
अब तुमसे मेरे नाम का नाता ही रह गया ।।

वो तो ज़मीं को छू के हैं यारो उरुज[६] पर ।
'मधुकर' फ़लक[७] को छू के भी अदना ही रह गया ।।

□

१. गोद २. आपस में बातचीत करना ३. जमशीद का प्याला ४. तृप्त
५. मुश्किल ६. तरक़्क़ी ७. आसमान

नाज़ुक कली में आज वो रंगत नहीं रही ।
खिलते हुए गुलों में भी नकहत[1] नहीं रही ।।

अफ़सोस है कि दोस्त मोहब्बत नहीं रही ।
इन्साँ के दिल में आज वो उल्फ़त नहीं रही ।।

अपनों से हमको रोज़ ही मिलते रहे हैं ग़म ।
ग़ैरों से हमको कोई शिकायत नहीं रही ।।

शुक्रे ख़ुदा कि दिल तो अभी बादशाह है ।
माना कि अपनी आज हुकूमत नहीं रही ।।

क्यों ख़ाली हाथ आये सवाली हैं लौटकर ।
हातिम के घर भी आज सख़ावत[2] नहीं रही ।।

उस वक़्त गुदगुदाया मुझे हुस्ने नाज़ ने ।
जब मुझको मुस्कुराने की आदत नहीं रही ।।

मरते हैं लोग देश में अपनों की घात से ।
'मधुकर' वो लिख रहे हैं बग़ावत नहीं रही ।।

□

१. ख़ुशबू २. दान शीलता , दान देना

८

आज दिल बेक़रार है यारो ।
उसका फिर इन्तज़ार है यारो ।।

उसकी आँखों में सुर्ख़ डोरे हैं ।
अब भी बाक़ी ख़ुमार है यारो ।।

देखिए अब जिधर भी गुलशन में ।
हर कली पर निखार है यारो ।।

आज सूरज किधर से निकला है ।
मुझपे छायी बहार है यारो ।।

खो गये हैं जो पा के मंज़िल को ।
उनमें मेरा शुमार है यारो ।।

भाई दुश्मन हुआ है भाई का ।
आज कैसा ये प्यार है यारो ।।

ग़ौर से मुझको देखते सब हैं ।
शक्ल क्या इश्तिहार है यारो ।।

□

६

हो गया ख़ात्म सिलसिला उनसे ।
कोई शिकवा न अब गिला उनसे ।।

रंजोग़म और दर्द का दिल में ।
बन गया एक क़ाफ़िला उनसे ।।

उनके नक़्शे क़दम[1] को पूजा तब ।
मंज़िलों का पता मिला उनसे ।।

रोज़ आते हैं मेरे ख़्वाबों में ।
यूँ है उल्फ़त का सिलसिला उनसे ।।

बज़्म में इस क़दर था रोब-ए-हुस्न[2] ।
कुछ न कह पाये बरमला[3] उनसे ।।

बारयाबी[4] मिरा मुक़द्दर है ।
फिर भी क़ायम है फ़ासला उनसे ।।

इस जुनूँ[5] ने तुझे दिया 'मधुकर' ।
कुछ तो कहने का हौसला उनसे ।।

□

१. पदचिन्ह २. हुस्न का दबदबा ३.खुलासा ,स्पष्ट
४. पहुँच ५. उन्माद , पागलपन

आइना दिल का सजा लेने दो ।
अपनी तस्वीर बना लेने दो ।।

कुछ तो माहौल बना लेने दो ।
दास्ताँ ग़म की सुना लेने दो ।।

गुन्चा-ए-फ़िक्र[1] खिला लेने दो ।
दिल का हर दाग़ सजा लेने दो ।।

मैं हूँ ख़ामोश अभी महफ़िल में ।
उनको कुछ और सता लेने दो ।।

रंग फीका है बहारों का आज ।
ख़ूने दिल मुझको बहा लेने दो ।।

आज है दिल में अँधेरा मेरे ।
याद का दीप जला लेने दो ।।

फ़िक्र फिर आज बुलन्दी[2] पर है ।
चाँद-तारों को झुका लेने दो ।।

अपने मुखड़े से हटाओ ज़ुल्फ़ें ।
चाँदनी में तो नहा लेने दो ।।

याद के दीप जलाओ 'मधुकर' ।
जश्ने दीवाली मना लेने दो ।।

□

१.चिन्तन के फूलों का गुच्छा २.ऊचाइयाँ

हुस्न का ये तिलस्मी[1] नगर देखिए ।
हर तरफ़ आइना है जिधर देखिए ।।

ये भी इक शहर था नामवर देखिए ।
उजड़े-उजड़े से ये बामो-दर देखिए ।।

आपके अब तकल्लुफ़[2] की हद हो चुकी ।
इक नज़र अब ख़ुदारा इधर देखिए ।।

कितना छलनी हुआ आपके इश्क़ में ।
मेरा जाने से पहले जिगर देखिए ।।

आप बिन ज़िन्दगी मेरी वीरान है ।
उजड़ा-उजड़ा है दिल का नगर देखिए ।।

बाद मग़रिब[3] के मिलने का वादा किया ।
हो गयी रफ़्ता-रफ़्ता सहर देखिए ।।

है कभी धूप में तो कभी छाँव में ।
मेरे जीवन का यारो सफ़र देखिए ।।

मुझपे इल्ज़ाम देने से पहले ज़रा ।
अपने दामन के धब्बे मगर देखिए ।।

शौक़ से आप परवाज़[4] करिये मगर ।
इक नज़र ताकते बालो पर देखिए ।।

कैसे ईमाँ सलामत रहे दोस्तो ।
हुस्न जलवानुमां है जिधर देखिए ।।

बढ़ रही रोज़ 'मधुकर' है दीवानगी ।
इश्क़ का धीरे-धीरे असर देखिए ।।

□

१. जादुई २. संकोच ३. पश्चिम (शाम) ४. उड़ान

सदियों की ख़ताओं को लम्हों में भुला दीजे ।
अब ज़ेह्न[१] की तल्ख़ी[२] को लिल्लाह मिटा दीजे ।।

जो तुमने उजाड़ा है वह गाँव बसा दीजे ।
हर घर में मोहब्बत की एक शम्मा जला दीजे ।।

फिर मेरी वफ़ाओं के बदले में सज़ा दीजे ।
पर पहले मोहब्बत की तारीख़ मिटा दीजे ।।

इन शरबती[३] आँखों से इक जाम पिला दीजे ।
यूँ अपनी मोहब्बत का दीवाना बना दीजे ।।

फिर प्यार के बन्दों पर हो जाये करम[४] यारब[५] ।
मुद्दत से जो बिछड़े हैं इक बार मिला दीजे ।।

तस्वीर क़रीने[६] से आँखों में बसा लूँगा ।
इक बार तो मुखड़े से चिलमन को हटा दीजे ।।

'मधुकर' जो ग़रीबों को पहुँचा न सके राहत ।
तो ऐसी हुकूमत का क़ानून जला दीजे ।।

□

१. स्मरण शक्ति, याददाश्त २. कड़ुवाहट ३. रंगीन
४. कृपा ५. ऐ ईश्वर ६. अच्छे तरीके

१३

हुस्न तो इश्क़ का है ख़ुदा दोस्तो ।
तुमने क्यों कह दिया बेवफ़ा दोस्तो ।।

वो मिला जो मुक़द्दर में था दोस्तो ।
हैं वो नादाँ जिन्हें है गिला दोस्तो ।।

दी मसीहा[1] ने जब भी दवा दोस्तो ।
और भी दर्दे दिल बढ़ गया दोस्तो ।।

खो गया भीड़ में है मुक़द्दर मिरा ।
मिल न पाया है अब तक पता दोस्तो ।।

मेरे हालात ने मुझको तनहा किया ।
मैं भी था वक़्त का रहनुमा[2] दोस्तो ।।

बुझती चिनगारियाँ ना दहकने लगें ।
दे रहे हो उन्हें क्यों हवा दोस्तो ।।

माफ़ कर दीजिएगा ख़ुदा के लिए ।
हो गयी जो भी मुझसे ख़ता दोस्तो ।।

हो यक़ीं ना तो दिल चीर कर देख लो ।
है फ़क़त प्यार का आइना दोस्तो ।।

१. वैद्य, हकीम २. नेतृत्व करने वाला

जितना क़िस्मत में है बस मिलेगा वही ।
आबो-दाना है जितना लिखा दोस्तो ।।

बाम[1] पर किसकी ज़ुल्फ़ें ये लहरा गयीं ।
छा गयी आसमाँ पर घटा दोस्तो ।।

छोड़ कर तेज़ तर तुम चले हो मगर ।
अपनी मंज़िल का दे दो पता दोस्तो ।।

है वफ़ा जिनकी फ़ितरत[2] में शामिल नहीं ।
उससे करिये भी कैसे गिला दोस्तो ।।

उसने लाकर गिराया मुझे चाह[3] में ।
जिसको समझा था मैं रहनुमा दोस्तो ।।

अब ज़मीं से तआल्लुक़ कि फ़ुर्सत कहाँ ।
चाँद-तारों से है सिलसिला दोस्तो ।।

आज 'मधुकर' भी दुनिया की इस भीड़ में ।
देखिए किस जगह खो गया दोस्तो ।।

□

१. छत २. आदत ३. कुआँ

क्या पता किस मोड़ पर कब सामना हो जायेगा ।
गर चलोगे इतना बच कर हादसा हो जायेगा ।।

उनकी नज़रों से छलक जाये जो पैमाना कहीं ।
दो घड़ी में सारा आलम मयकदा हो जायेगा ।।

उनके दिल में मेरी उल्फ़त जब असर कर जायेगी ।
देखना उस दिन वो मेरा हमनवा[1] हो जायेगा ।।

मेरे आँगन से अगर तुम इस तरह गुज़रा किये ।
देखते ही देखते ये रास्ता हो जायेगा ।।

कुछ सुकूँ मिल जायेगा सोचा था मैंने दोस्तो ।
क्या पता था दर्दे उल्फ़त ला दवा[2] हो जायेगा ।।

मत किसी इन्सान को शैतान समझो दोस्तो ।
आदमी का क्या पता कब देवता हो जायेगा ।।

राह में 'मधुकर' कभी तो होगा उनका सामना ।
देख लेना राज़े दिल ख़ुद आइना हो जायेगा ।।

□

१. आवाज़ में आवाज़ मिलाने वाला २. जिसकी कोई दवा न हो

१५

वो सँवर कर निकलने लगे ।
चाँद-तारे मचलने लगे ।।

जब से ख़त क्या है उनका मिला ।
मुझसे अहबाब[1] जलने लगे ।।

इस क़दर प्यार मत कीजिए ।
दिल को तनहाई खलने लगे ।।

हुस्न पर जब शबाब आ गया ।
जाम आँखों में ढलने लगे ।।

आशिक़ों की ख़ुदा ख़ैर कर ।
दोश[2] पर नाग पलने लगे ।।

शह्र से जब मैं रूख़सत हुआ ।
सब हसीं हाथ मलने लगे ।।

जामुनी हैं घटायें उठीं ।
या कि गेसू मचलने लगे ।।

वो हवाओं का रुख़ देखकर ।
रास्ते अब बदलने लगे ।।

इस सियासत के मैदान में ।
खोटे सिक्के भी चलने लगे ।।

दोस्ती के बहाने यहाँ ।
दोस्त को दोस्त छलने लगे ।।

बज़्म में जब भी 'मधुकर' गया ।
हुस्न वाले सँभलने लगे ।।

□

१. मित्र २. काँधा

16

जिस घड़ी उनकी नज़र मुझपे ठहर जायेगी ।
मेरी तक़दीर उसी वक़्त सँवर जायेगी ।।

आइये मेरे ख़यालात में बातें करिये ।
वर्ना ये रात भी रो रो के गुज़र जायेगी ।।

आप ऐसे ही अगर सामने बैठे रहिये ।
दिल के काशाने[1] में तस्वीर उतर जायेगी ।।

मुझको तनहाई में अब आप पुकारा न करें ।
फ़िक्र के पर को कोई कैंची कतर जायेगी ।।

जो हक़ीक़त है उसे कैसे भुला पाओगे ।
तुम जिधर जाओगे आवाज़ उधर जायेगी ।।

जिसकी शोहरत[2] में सियासत का हुनर शामिल है ।
उसकी शोहरत भी किसी रोज़ बिखर जायेगी ।।

एक ही बज़्म में जाना है सभी को 'मधुकर' ।
बच के सागर से नदी और किधर जायेगी ।।

१. घोंसला (ठिकाना) २. ख्याति

मेरे वुजूद में तो कोई रहनुमा[1] भी था ।
जिसकी वजह से दिल में मिरे हौसला भी था ।।

जिस रह पे जा रहा हूँ बहुत धुंधलका सा है ।
पहले इसी डगर पे कोई दिलरुबा भी था ।।

वो ख़ुश्क शाख़ देखिए सूनी है किस क़दर ।
शायद इसी जगह पे कोई घोंसला भी था ।।

मजबूरियों पे तुम भी हँसोगे सभी के साथ ।
महफ़िल में मुझको तुमसे यही आसरा भी था ।।

रुख़सत जहाँ से हो गया उल्फ़त के दर्द में ।
इक वो मरीज़ जिसका मरज़ ला दवा[2] भी था ।।

ग़म आपने दिये हैं न अब हाल पूछिये ।
क्या कोई राज़ आपसे मेरा छुपा भी था ।।

'मधुकर' मिली सज़ा है कि देखूँ न अब उसे ।
दिल तोड़ डाला जो कि मिरा आइना भी था ।।

□

१. लीडर २. जिसकी कोई दवा नहीं

१८

उठ के वो महफ़िल से जब जाने लगे ।
बज़्म में सब लोग दीवाने लगे ।।

बादलों के क़ाफ़िले आने लगे ।
गीत सब बरसात के गाने लगे ।।

कल तलक गुलशन जो थे महके हुए ।
आज क्यों वो मुझको वीराने लगे ।।

जब फ़ज़ाओं में तरन्नुम छा गया ।
धुन मिरे गीतों की वो गाने लगे ।।

जी रहा हूँ मयकदे के साये में ।
फिर न कोई शैख़ बहकाने लगे ।।

उनके आने की ख़बर जब आ गयी ।
हम भी घर फूलों से महकाने लगे ।।

फिक्रे दौराँ[1] जिनका 'मधुकर' काम था ।
लोग वो दुनिया को दीवाने लगे ।।

□

१. दौर की चिन्ता (वर्तमान की चिन्ता)

लाशों का शह्र-शह्र में व्यापार हो गया ।
दहशत का कूचे-कूचे में बाज़ार हो गया ।।

हर शख़्स की निगाह में बेकार हो गया ।
गुज़रे हुए दिनों का मैं अख़बार हो गया ।।

हर सिम्त[1] नफ़रतों की सियासत है आज-कल ।
अब तो यहाँ पे जीना भी दुश्वार हो गया ।।

आज़ाद जब हुआ हूँ सियासत के जाल से ।
ज़ुल्फ़ों में मैं ग़ज़ल की गिरफ़्तार हो गया ।।

मरना तो चाहता था मगर उसको देखकर ।
ख़ुद अपनी ज़िन्दगी से मुझे प्यार हो गया ।।

मुफ़लिस[2] की झोपड़ी में खिला है गुलाब जब ।
हर ज़रपरस्त[3] उसका ख़रीदार हो गया ।।

उनका गुज़र हुआ है इधर से ज़रुर आज ।
'मधुकर' ये शह्र नाफ़[4]-ए-तातार[5] हो गया ।।

□

१. दिशा २. निर्धन ३. दौलत का पुजारी ४. नाभि
५. तुर्किस्तान का एक शह्र जो कि हिरन की कस्तूरी के लिए मशहूर है

२०

मेरे अश्कों से मेरा मुक़द्दर बना ।
क़तरा-क़तरा सिमट कर ये सागर बना ।।

हुस्न की हद से जब बेनियाज़ी[1] बढ़ी ।
क़िस्सा-ए-ग़म का तब दिल में दफ़्तर बना ।।

आँख जिस सिम्त हो प्यार ही प्यार हो ।
सबकी नज़रों में यारब[2] वो मन्ज़र बना ।।

जिसकी पूजा ख़यालों में करता हूँ मैं ।
उस सनम का मिरे दिल में है घर बना ।।

दुश्मनों से भला क्या शिकायत करें ।
अपना महबूब ही जब सितमगर बना ।।

फिर न हो सानहा कोई गुज़रात सा ।
फूस का एक मुश्किल से छप्पर बना ।।

हो न झगड़ा जहाँ रामो रहमान का ।
उस जगह घर इबादत का 'मधुकर' बना ।।

१. लापरवाही २. हे ईश्वर

२१

क्यों ज़िद ये कर रहे हो कि मैं भी यही कहूँ ।
मैं जानवर को कैसे भला आदमी कहूँ ।।

क्यों आज मुझको देख के तुम मुस्कुरा दिये ।
दिल की लगी कहूँ या इसे दिल्लगी कहूँ ।।

हाँ कह के तोड़ दे तु फ़ज़ा के सुकूत[1] को ।
तो अपनी ज़िन्दगी को नयी ज़िन्दगी कहूँ ।।

रहते हो मेरे पास ख़यालात में तुम्हीं ।
बतलाओ किस तरह से तुम्हें अजनबी कहूँ ।।

आरिज़[2] हैं आपके कि शगुफ़्ता[3] गुलाब हैं ।
या अपने ज़ेह्न की इसे बरजस्तगी[4] कहूँ ।।

जो कुछ कहा है आपसे इज़हारे इश्क़ है ।
दीवानगी कहूँ या इसे शायरी कहूँ ।।

'मधुकर' ग़में फिराक में झेलीं जो सख़्तियाँ ।
कहिये तो दिल की दास्ताँ अपनी सभी कहूँ ।।

□

१. ख़ामोशी २. गाल ३. खिले हुए ४. फौरन,तुरन्त

मय नज़र से पिला गया कोई ।
इस तरह से जिला गया कोई ।।

मैं तो ख़ामोश कब से बैठा था ।
तार दिल के हिला गया कोई ।।

उजड़ा-उजड़ा सा दिल का गुलशन था ।
फूल उसमें खिला गया कोई ।।

दिल की राहों में तो अँधेरा था ।
आ के दीपक जला गया कोई ।।

इश्क़ का वास्ता हमें देकर ।
दो दिलों को मिला गया कोई ।।

उसका अन्दाज़े दिलबरी[1] देखो ।
मुझको हँस कर रुला गया कोई ।।

दर्दे दिल हद से जब बढ़ा 'मधुकर' ।
ज़ेह्र देकर सुला गया कोई ।।

□

१. दिल को लुभाने वाला

२३

कभी याद उनकी भुलाई नहीं ।
जुदाई है लेकिन जुदाई नहीं ।।

ग़मों से मोहब्बत हुई इसलिए ।
ख़ुशी जब मुझे रास आई नहीं ।।

भरी बज़्म में ख़ूने दिल कर दिया ।
मगर ये कहा बेवफ़ाई नहीं ।।

सफ़ीने को साहिल मिले किस तरह ।
कभी हाथ पतवार आई नहीं ।।

मिरे दिल की वहशत[1] वो समझेगा क्या ।
शबे हिज्र जिसने मनाई नहीं ।।

गुनाहों से बचिएगा ऐ शैख़ जी ।
न पीना कोई पारसाई[2] नहीं ।।

फ़साना-ए-ग़म[3] कैसे 'मधुकर' लिखूँ ।
रही दिल में अब रोशनाई नहीं ।।

□

१. उलझन २. पवित्रता ३. ग़म का क़िस्सा

यारों ने जब भी तंज़[1] के हैं तीर चलाये ।
फूलों की तरह ज़ख़्मे जिगर मैंने सजाये ।।

मइयत पे मेरी कोई भी आँसू न बहाये ।
इक अरसा हो गया मेरी अर्थी को उठाये ।।

रोता रहा हूँ हिज्र में मैं तेरे शबोरोज़[2] ।
इतना किसी को दोस्त न अल्लाह रूलाये ।।

दिन-रात उस हसीन की तस्वीर में गुम हूँ ।
अब दैर[3] ना हरम[4] न कलीसा[5] मुझे भाये ।।

'मधुकर' बिछड़ के यार से बिछड़ा है जहाँ से ।
ये दिन ख़ुदा न और किसी को भी दिखाये ।।

□

१. व्यंग्य २. रात-दिन ३. मंदिर ४. काबा ५. गिरजाघर

२५

कुछ रह गयी न फ़िक्र अज़ाबो-सवाब[१] की ।
ऐ इश्क़ तूने क्यों मिरी मिट्टी ख़राब की ।।

अब के बरस भी आयी थी गुलशन में फिर बहार ।
पर आँधियों ने तोड़ दीं शाख़ें गुलाब की ।।

तोहफ़े में मेरे दिल को बहुत ज़ख़्म मिल गये ।
ताबीर[२] आज पूरी हुई मेरे ख़्वाब की ।।

दीवाना हो गया हूँ मैं पहले ही आपका ।
अब रस्म तोड़ दीजिए शर्मो हिजाब[३] की ।

ख़ुद नाम लिख ही जायेगा दिल की किताब पर ।
नज़रे करम जो होगी किसी माहताब की ।।

शर्मो हया का आँख में पानी रहे सदा ।।
वैसे भी ज़िन्दगी में ज़रुरत है आब[४] की ।।

'मधुकर' हसीं तो लगती है इन्साँ की ज़िन्दगी ।
लेकिन ये ज़िन्दगी भी है जैसे हुबाब[५] की ।।

१. अच्छे और बुरे कार्यों का फल २. स्वप्न फल
३. लज्जा ४. पानी ५. बुलबुला

२६

क्या जुर्म किया मैंने था जो मुझको सज़ा दी ।
कश्ती मिरी मजधार में यारों ने डुबा दी ।।

है जुर्म कि इन्साफ़ की ज़ंजीर हिला दी ।
गर्दन पे मिरी आपने शमशीर चला दी ।।

क्या तुझको मिला बादे शरर ये तो बता दे ।
बुझते हुए शोलों को यहाँ तूने हवा दी ।।

अश्कों से जिसे हमने कभी सर्द[1] किया था ।
वो आग मिरे क़ल्ब[2] के दामन में लगा दी ।।

दीवार तो मख़दूश[3] बहुत दिन से खड़ी थी ।
कुछ लोग ये कहते हैं कि बारिश ने गिरा दी ।।

इस इश्क़ से ऐ दोस्त ख़ुदा तुझको बचाये ।
इस इश्क़ ने हस्ती मिरी मिट्टी में मिला दी ।।

उतरा ही नहीं उसका नशा आज भी 'मधुकर' ।
मयख़ाने में साक़ी ने जो आँखों से पिला दी ।।

□

१. ठन्डा २. दिल ३. जरजर

२७

मेरे महबूब का कोई सानी[1] नहीं ।
ये हक़ीक़त है यारो कहानी नहीं ।।

आप क्यों मुझसे हैं बदगुमाँ[2] इस क़दर ।
मुझको है आपसे बदगुमानी[3] नहीं ।।

हैं तो क़िस्से बहुत हुस्न और इश्क़ के ।
हीर-राँझा सी कोई कहानी नहीं ।।

ज़ख़्म जो आपने मेरे दिल को दिये ।
इससे बढ़ कर तो कोई निशानी नहीं ।।

आज बंसी की धुन में कहाँ राग वो ।
इसलिए कोई मीरा दिवानी नहीं ।।

अब कहाँ घर के आँगन में इतनी जगह ।
रोपता कोई भी रातरानी नहीं ।।

उनका पैग़ाम[4] ये शाम को आ गया ।
आज की रात 'मधुकर' सुहानी नहीं ।।

□

१. दीगर, दूसरा २. नाराज़ ३. नाराज़गी ४. संदेश

२८

इश्क़ को आप दिल में बसा लीजिए ।
हुस्न की आबरु यूँ बचा लीजिए ।।

रोज़ क़दमों के लेता मैं बोसे रहूँ ।
अपनी चौखट का पत्थर बना लीजिए ।।

अपना ऐसा मुक़द्दर कहाँ दो घड़ी ।
छाँव में गेसुओं के बिता लीजिए ।।

मेरी चाहत रहेगी हमेशा जवाँ ।
अपनी साँसों में मुझको बसा लीजिए ।।

है अँधेरा बहुत इश्क़ की राह में ।
दिल में उल्फ़त की शम्मा जला लीजिए ।।

ईद में अब गले से लगा कर मुझे ।
सब गिले शिकवे दिल के मिटा लीजिए ।।

ज़िन्दगी चार दिन है फ़क़त दोस्तो ।
कुछ हँसा लीजिए कुछ रुला लीजिए ।।

लग न जाये कहीं आज ख़ुद की नज़र ।
अपनी दर्पन से नज़रें हटा लीजिए ।।

मैंने कब ये कहा आइना देखकर ।
अपने दिल पर ही बिजली गिरा लीजिए ।।

फिर ये मौक़ा मिले ना मिले क्या पता ।
दास्ताने मोहब्बत सुना लीजिए ।।

इश्क़ करना हसीनो से आसाँ नहीं ।
ख़ाक मे अपनी हस्ती मिला लीजिए ।।

मिल के रहने का यारो मज़ा और है ।
हैं जो नाराज़ उनको मना लीजिए ।।

क़ैद करना तो सूरज को मुम्किन नहीं ।
हाथ अपने भले ही जला लीजिए ।।

अपने बापू के सपने की ताबीर हो ।
अपनी हिन्दी को बिन्दी बना लीजिए ।।

लाख मायूस हों आप तक़दीर से ।
दिल के रंजो अलम को छुपा लीजिए ।।

फ़न[1] का नीलाम होता है बाज़ार में ।
आबरू-ए-ग़ज़ल अब बचा लीजिए ।।

ख़ून सस्ता है इन्सान का आज-कल ।
आप जितना भी चाहे बहा लीजिए ।।

जो कभी अपने गुलशन में मुरझाये थे ।
उन गुलाबों को फिर से खिला लीजिए ।।

कीजिए आज शिकवा न मंहगाई का ।
अब ज़ुबाँ पर भी ताला लगा लीजिए ।।

करिये साक़ीगरी वाइज़े मोहतरम् ।
नेकियाँ इस तरह से कमा लीजिए ।।

वक़्त आये तो ऐ हिन्द की बेटियों ।
अपने आँचल का परचम बना लीजिए ।।

बाद में कीजिए दोस्ती शौक़ से ।
दिल में विश्वास पहले जगा लीजिए ।।

आप अहले[2] वफ़ा हैं अगर हिन्द के ।
एकता की क़लम को उठा लीजिए ।।

सो गये हों अगर राम और कृष्ण के ।
दिल में उपदेश यारो जगा लीजिए ।।

फिर अमीरी-ग़रीबी में ना फ़र्क़ हो ।
मसअला ये भी सुलझा ज़रा लीजिए ।।

अपनी धरती में हीरे जवाहर छुपे ।
चाहिए जितनी दौलत उगा लीजिए ।।

पेश करता हूँ यारो बड़े प्यार से ।
मेरे अश्आर दिल में बसा लीजिए ।।

१. कला २. वफ़ादार

२६

अब उनसे मुलाक़ात का ये वक़्त नहीं है ।
इस इश्क़ की सौग़ात का ये वक़्त नहीं है ।।

तामीरे चमन कीजिए ऐ दोस्तो मिलकर ।
बेकार के जज़्बात का ये वक़्त नहीं है ।।

मस्जिद में हुआ क्या है शिवाले में हुआ क्या ।
इन तल्ख़[1] सवालात का ये वक़्त नहीं है ।।

गरदाब[2] से कश्ती को बचाना है हमें आज ।
बेबात की अब बात का ये वक़्त नहीं है ।।

मैं दिन को कहूँ रात कभी हो नहीं सकता ।
फ़रसूदा[3] ख़यालात[4] का ये वक़्त नहीं है ।।

है मुल्क की सरहद पे खड़ा दुश्मने जानी ।
आपस में फ़सादात का ये वक़्त नहीं है ।।

'मधुकर' है बहुत अम्न की दुनिया में ज़रुरत ।
ऐटम के तर्जुबात का ये वक़्त नहीं है ।।

□

१. कड़वा २. भँवर ३. पुराने ४. विचार

३०

हो गयी सोच कर आँख गीली मिरी ।
प्यार की रह में हायल[1] ग़रीबी मिरी ।।

कल रहे ना रहें क्या ठिकाना तिरा ।
बादशाही से अच्छी फ़क़ीरी मिरी ।।

इस फ़सादी सियासत से आज़ाद हूँ ।
इससे बढ़ कर है क्या ख़ुशनसीबी मिरी ।।

वक़्त आने पे पहचान वो ना सका ।
जिससे गहरी कभी दोस्ती थी मिरी ।।

मुफ़लिसी की मुझे दे गयी बद्दोआ ।
घर से रूख़सत हुई जब रईसी मिरी ।।

आप नाज़ुक भी और दिल के कम्ज़ोर हैं ।
सुन नहीं पायेंगे आप बीती मिरी ।।

मुझसे 'मधुकर' ख़फ़ा हो गयी हर कली ।
किसको इल्ज़ाम दे बदनसीबी मिरी ।।

□

१. रुकावट, बाधा

३१

हर दफ़ा चोट खायी है दिल पर, बज़्म में तेरी जब भी हैं आये ।
देख कर तुझको ऐ शम्मे महफ़िल, लाखों परवाने हैं तिलमिलाये ।।

बर्क़ तुम मुझपे क्यों हो गिराते, हमने ख़ुद अपने घर हैं जलाये ।
वक़्त ऐसे भी आये हैं यारो, रोते-रोते भी हम मुस्कुराये ।।

एक मुद्दत हुयी हो गया था, जिससे तर्के तआल्लुक़ हमारा ।
जाने क्या बात है आज़ यारो, सुब्ह से याद उसकी सताये ।।

लाख कश्ती फंसी है भँवर में, उम्र गुज़री है फिर भी सफ़र में ।
हो गयी दोस्तो एक मुद्दत, मुझको तूफ़ाँ से रिश्ता बनाये ।।

है अहिन्सा हमें जाँ से प्यारी,अम्न के हम रहे हैं पुजारी ।
हम न इन्सानियत से डिगेंगे, ज़ुल्म कोई भले हम पे ढाये ।।

राह में दोस्त अह्दे वफ़ा[1] के, जान की कोई क़ीमत नहीं है ।
रह सके इसपे साबित क़दम तो, हाथ तब दोस्ती का बढ़ाये ।।

यूँ तो क़िस्सा पुराना हुआ है, उससे बिछड़े ज़माना हुआ है ।
ज़ेह्न में फिर भी बाक़ी हैं 'मधुकर' दिलरुबा उसकी यादों के साये ।।

□

१. वफ़ा का वायदा

३२

उस बुत के ग़म में सुब्ह हुयी शाम हो गयी ।
रुसवाई अब जहाँ की मिरे नाम हो गयी ।।

बीमारी ला इलाज थी कल तक मरीज़ की ।
अब मौत की तो गोद में आराम हो गयी ।।

चर्चा हमारे इश्क़ का है हर ज़ुबान पर ।
ये बात सारे शह्र में अब आम हो गयी ।।

कैसी हवा चली है हमारे चमन में आज ।
सदियों पुरानी दोस्ती नाकाम हो गयी ।।

साक़ी के घर का जब से किया है तवाफ़[1] क्या ।
अब ज़िन्दगी भी मूरिदे इल्ज़ाम[2] हो गयी ।।

देखी किसी की मौत तो थर्रा उठी है क्यों ।
क्या ज़िन्दगी भी वाक़िफ़े अंजाम हो गयी ।।

'मधुकर' जहाँ में वो न हुए मेरे आज-तक ।
जिनके लिए ये ज़िन्दगी बदनाम हो गयी ।।

□

१.परिक्रमा २. आरोप में लिप्त

३३

फूल भी अब महकते नहीं हैं, चाँद भी अब निकलता नहीं है ।
पास जब मेरे होते नहीं तुम, दिल हमारा बहलता नहीं है ।।

एक पल को ही सूरत दिखा दो, झूठी तस्कीन मुझको दिला दो ।
जां कनी जैसा आलम है अब तो, दम हमारा निकलता नहीं है ।।

कोई ज़ख़्मों पे मरहम लगाये, अब नहीं कोई हमदर्द ऐसा ।
ये है दुनिया बड़ी बेमुरउअत, साथ कोई भी चलता नहीं है ।।

राहे उल्फ़त में अक्सर ये देखा, पाँव पड़ता नहीं है सँभलकर ।
इश्क़ की चाह[1] में जो गिरा फिर, उम्र भर वो निकलता नहीं है ।।

हीर-राँझा का क़िस्सा हो चाहे, क़ैस-लैला की उल्फ़त भले हो ।
तुम तवारीख़[2] देखो कहीं की, इश्क़ शोले उगलता नहीं है ।।

शोला-ए-हुस्न से आज उसके, लग गयी आग दिल के चमन में ।
कितना दिल उसका पत्थर है देखो, अश्क बन कर पिघलता नहीं है ।।

प्यार 'मधुकर' को उनसे हुआ क्या, उड़ गये दिल के हाथो से तोते ।
माना दीवार दौलत है लेकिन, इश्क़ सिक्कों से तुलता नहीं है ।।

१. कुआँ २. इतिहास

कुर्सी के दाँव-पेंच में उलझाये हुए हैं ।
मानिन्द एक तिफ़्ल[1] के बहलाये हुए हैं ।।

वादा न कोई पूरा किया पाँच बरस में ।
तशरीफ़ फिर भी बज़्म में वो लाये हुए हैं ।।

निकले गा ख़ुश्क सैहरा[2] से इक दूध का दरिया ।
दिल अपना हम भी आस में भरमाये हुए हैं ।।

माना कि दर पे आपके हैं लाख सवाली ।
दामन को हम भी शौक़ से फैलाये हुए हैं ।।

अँगड़ाई का ये तौर निराला है जहाँ से ।
नदियों की तरह आप तो बलखाये हुए हैं ।।

ऐ फ़र्ज़े गुलसिताँ कि हम इस नफ़्स[3] की ख़ातिर ।
अब भी वफ़ा की राह से कतराये हुए हैं ।।

हिन्दू हो कोई या कि मुसलमान हो कोई ।
'मधुकर' ये सच है एक ही माजाये[4] हुए हैं ।।

□

१. दूध पीता बच्चा २. रेगिस्तान ३. अपने फ़ायदे के लिए ४. एक ही मां के पैदा किए हुए

३५

इस बाग़ की मिट्टी से जिसे प्यार नहीं है ।
महके हुए फूलों का वो हक़दार नहीं है ।।

लिक्खे न हक़ीक़त वो क़लमकार नहीं है ।
हर शख़्स किसी क़ौम में ग़द्दार नहीं है ।।

तामीर[1] गुलसिताँ की करो शौक़ से मिलकर ।
पर बेचने का आपको अधिकार नहीं है ।।

ये इल्मो हुनर[2] भेद नहीं करता किसी से ।
भाषा पे किसी क़ौम का अधिकार नहीं है ।।

उस कश्ती का दुश्वार है साहिल पे पहुँचना ।
मल्लाह के गर हाथ में पतवार नहीं है ।।

जिस शख़्स को मिलना है चला आये ख़ुशी से ।
तामीर मिरे घर कोई दीवार नहीं है ।।

'मधुकर' वो ज़माने में नहीं आज है शायर ।
जो शायरी के साथ गुलूकार नहीं है ।

□

१. निर्माण २. ज्ञान और कला

३६

कश्मीर हम हैं खाते क़सम तेरी शान की ।
ख़ुशबू उदू[1] को देंगे नहीं ज़ाफ़रान की ।।

सब लूटने में मस्त हैं इस सर ज़मीन को ।
है फ़िक्र किसको आज के हिन्दोस्तान की ।।

इन्सानियत के वास्ते ये बात है मुफ़ीद[2] ।
इज़्ज़त भी करना सीखिए गीता-क़ुरान की ।।

शोषण यहाँ पे हो रहा हर सिम्त देखिए ।
हिम्मत की दाद दीजिए फिर भी किसान की ।।

वोटों के जरिये पायेंगे वो शाही मसनदें[3] ।
जो बात कर रहे हैं हमारी ज़ुबान की ।।

हैराँ हूँ चापलूसों की लम्बी क़तार से ।
अब सोचता है कौन यहाँ आन-बान की ।।

तरका[4] यतीम का तो सभी खा गये अज़ीज़ ।
परवाह कौन करता है नन्हीं सी जान की ।।

है डर कि अब ख़ला में कहीं आग लग न जाये ।
लाती है फ़िक्र[5] रोज़ ख़बर आसमान की ।।

'मधुकर' हमारे दौर में महलों का ज़िक्र कर ।
अब बात कौन करता है कच्चे मकान की ।।

□

१. दुश्मन २. अच्छी ३. गद्दियाँ (कुर्सियाँ) ४. उत्तराधिकारी को मिलने वाली सम्पत्ति, दाय ५. कल्पना

३७

किसकी अदा ये सूरते घनश्याम हो गयी ।
राधा भी आज देखिए बदनाम हो गयी ।।

इक द्रोपदी की आबरु अर्जुन के सामने ।
महफ़िल में आज दोस्तो नीलाम हो गयी ।।

मरियम[1] की पारसाई[2] कभी बिक न पायेगी ।
सीता निकल के घर से अगर राम हो गयी ।।

जिस बात पर मसीह चढ़े थे सलीब[3] पर ।
वह बात मेरे दौर में नाकाम हो गयी ।।

कैसे कहेंगे लोग ये गौतम का देश है ।
हैवानियत जो आज सरे आम हो गयी ।।

अच्छा हुआ जो बज़्म से वाइज़ चला गया ।
झूठी क़सम तो खाने को आराम हो गयी ।।

अब हमने कर लिया है तिरे घर का जब तवाफ़[4] ।
हसरत हमारी पूर्ण सभी धाम हो गयी ।।

□

१. हज़रत ईसा की मां (एक आदर्श नारी) २. पाक़ीज़गी ३. मृत्यु तख़्ता, जिस पर हज़रत ईसा को सूली दी गयी थी ४. परिक्रमा

३८

जब से तुम्हारे इश्क़ का एहसास हो गया ।
मुझको भी अपने आप पे विश्वास हो गया ।।

ये हुस्न ये मिज़ाज ये अन्दाज़े बाँकपन[1] ।
जिसने भी देखा आपको वो दास हो गया ।।

वो आ के मुस्कुरा दिये ऐसी अदा के साथ ।
उजड़े चमन में दोस्तो मधुमास हो गया ।।

हम ही सदा रहे हैं हक़ीक़त से रुशनास[2] ।
हमने जो लिख दिया वही इतिहास हो गया ।।

ये मसअले भी रोज़ बदलते हैं करवटें ।
कल तक जो दूर था वही अब पास हो गया ।।

दहशत की ज़द में देखिए दुनिया है आज-कल ।
लोगों को विश्व युद्ध का आभास हो गया ।।

कैसे बचेंगे आप ज़रा ये तो सोचिए ।
ऐटम बमों का विश्व अगर ग्रास हो गया ।।

लाखों की ज़िन्दगी को अजल[3] ने निगल लिया ।
उनके लिए तो जंग का अभ्यास हो गया ।।

आतंक मेरे मुल्क में है बीस साल से ।
पर आपके तो वास्ते उपहास हो गया ।।

□

१. अलबेलापन २. शक्ल का पहचानना ३. मृत्यु

३९

एक था मनचला ।
जिसने मुझको छला ।।

राबता इश्क़ का ।
मुद्दतों तक चला ।।

काम ऐसा करो ।
हो सभी का भला ।।

वो मिलेगा तुझे ।
दिल में कर हौसला ।।

मेरे तेरे है क्यों ।
दरमियाँ[1] फ़ासला ।।

हो गया इश्क़ है ।
आपसे बरमला[2] ।।

ताज और तख़्त का ।
हर जगह मरहला[3] ।।

बज़्म में आ गया ।
फिर वही दिलजला ।।

रोशनी कुछ तो है ।
लाख सूरज ढला ।।

□

१. बीच में २. स्पष्ट ३. गुत्थी

है अज़ल[1] से चला ।
इश्क़ का सिलसिला ।।

साक़िया मत पिला ।
मुझसे नज़रें मिला ।।

जब निगाहें मिलीं ।
राज़े उल्फ़त खुला ।।

तुम न छोड़ो जफ़ा[2] ।
हम करें ना गिला ।।

क्या है औक़ाते ग़म ।
जो मुझे दे भुला ।।

दर्स[3] सच्चाई का ।
आइनों से मिला ।।

है कँवल तो सदा ।
कीचड़ों में खिला ।।

आ भी जा आ भी जा ।
अब न इतना रुला ।।

आँसुओं का बना ।
प्यार में क़ाफ़िला ।।

चाँदनी खिल गयी ।
चाँद जब भी खिला ।।

हिज्र में चल पड़ा ।
अश्क का क़ाफ़िला ।।

१. प्रारम्भ (शुरुआत) २. ज़ुल्म
३. सबक़

सबके ऊपर ।
आला अफ़्सर ।।

सबका मालिक ।
अल्ला-ईश्वर ।।

दुनिया के ग़म ।
मन के अन्दर ।।

रातें डसतीं ।
नागन बन कर ।।

सुन कर ग़ज़लें ।
झूमे अम्बर ।।

हँस कर मारो ।
दिल पर ख़ंजर ।।

रिश्ते-नाते ।।
झूठे अक्सर ।।

दुनिया में है ।
जीना दूभर ।।

कल को किसने ।
देखा 'मधुकर' ।।

□

रमता जोगी बहता पानी ।
इनकी मंज़िल किसने जानी ।।

सुन कर मेरी राम कहानी ।
वह भी होगा पानी-पानी ।।

दीपक और पतंगे जैसी ।
तेरी मेरी प्रीति पुरानी ।।

स्वप्न सुगन्धित कर देती है ।
मेरे आँगन रात की रानी ।।

कल तक मीत रहा जो अपना ।
आज वही है दुश्मन जानी ।।

कोयल कानों में रस घोले ।
मद बरसाये पुरवा रानी ।।

कण-कण धरती का है प्यासा ।
कब आओगी बरखा रानी ।।

नग़्मे मेरे गंगा-जमनी ।
ग़ज़लें मेरी हिन्दुस्तानी ।।

जब-जब देश पड़ा संकट में ।
तब-तब हमने दी क़ुर्बानी ।।

मिल जुल कर हम रहना सीखें ।
कह गये पंडित, मुल्ला, ज्ञानी ।।

कलियों से मिलने को चलिए ।
'मधुकर' है ये रात सुहानी ।।

□

४३

मौसम में तबदीली आयी ।
फिर रितु रंग रंगीली आयी ।।

सावन भादों में इठलाती ।
पुरवा गीली-गीली आयी ।।

तेरे चित्र से ये लगता है ।
दुल्हन ज्यों शर्मीली आयी ।

मेरे गीत सुनाने मुझको ।
कोयल एक सुरीली आयी ।।

आयी जब-जब पाती उसकी ।
शहदीली-शहदीली आयी ।।

मेरे मन में आस जगाने ।
एक किरन चमकीली आयी ।।

ऐ 'मधुकर' मदहोश न होना ।
फिर से शाम नशीली आयी ।।

□

फ़िक्र[1] में जब तक यार न होगा ।
कविता में शृंगार न होगा ।।

जिसमें उसका ज़िक्र नहीं है ।
वह चिन्तन स्वीकार न होगा ।।

तेरे आगे झूठी क़समें ।
यह मेरा किरदार[2] न होगा ।।

सारे जग में ताजमहल सा ।
कोई भी शहकार[3] न होगा ।।

हाथो में पतवार नहीं तो ।
कोई दरिया पार न होगा ।।

बाक़ी हस्ती है गर तेरी ।
तो उसका दीदार न होगा ।।

मौत नहीं गर मेरी है तो ।
कोई ख़ंजर पार न होगा ।।

कश्ती डूब गयी गर मांझी ।
तो तुझसा ग़द्दार न होगा ।।

पढ कर मेरा चेहरा देखो ।
ऐसा तो अख़बार न होगा ।।

हश्र में यारो ना जायेंगे ।
पहलू में गर यार न होगा ।।

'मधुकर' उल्फ़त के गारे का ।
कभी क़िला मिसमार[4] न होगा ।।

□

१. चिन्तन २. चरित्र ३. किसी कलाकार की सर्वोत्तम कला ४. ढहजाना

प्यार में हमने ऐसा मंज़र[1] देखा है ।
अपनी आँखों अपना मुक़द्दर देखा है ।।

झील में सबने खिला कँवल देखा होगा ।
मैंने तो उनके अधरों पर देखा है ।।

जब भी देखा झाँक के उसकी आँखों में ।
ख़ामोशी के बीच में पत्थर देखा है ।।

उस बहुरूपी ने जब भी देखा मुझको ।
तब चन्दा सा रूप बदल कर देखा है ।।

दर्पन में जब भी अपना चेहरा देखा ।
आँखों में इक ख़ुश्क समन्दर देखा है ।।

अपने क़त्ल की साज़िश[2] का तब पता चला ।
जब यारों के बीच में फँस कर देखा है ।।

अपना जिसको 'मधुकर' समझा था मैंने ।
आस्तीन में उसकी ख़ंजर देखा है ।।

□

१. दृश्य २. षडयंत्र

४६

अब करिश्मे[1] भी नये कुछ हो रहे हैं ।
शान्ति की गंगा में दामन धो रहे हैं ।।

कल तलक तो अम्न[2] था सारे वतन में ।
आज का अख़बार पढ़ कर रो रहे हैं ।।

झिलमिलाते आँसुओं की कल्पना में ।
क्यों सुनहरे हम सवेरे खो रहे हैं ।।

प्यार की वह फस्ल काटें किस तरह से ।
बीज नफ़रत के दिलों में बो रहे हैं ।।

बात भी करिये उजालों की तो किस से ।
रात के जागे सुबह को सो रहे हैं ।।

प्रेम, पूजा, अर्चना, श्रद्धा भुला कर ।
देश की पहचान जग से खो रहे हैं ।।

कोई शायद मन्त्र उल्टा पढ़ गया है ।
साँप भी 'मधुकर' सपेरे हो रहे हैं ।।

□

१. चमत्कार २. शान्ति

३७

जाने कितनी सदियाँ गुज़रीं अपनी इक तनहाई में ।
क़ैद हुए हैं कितने समन्दर आँखों की गहराई में ।।

इक तेरा सपना बाक़ी था वो भी आख़िर टूट गया ।
यूँ तो लाखों ख़्वाब सजाये आँखों की बीनाई में ।।

तेरी हर इक बाँकी अदा की कैसे मैं तारीफ़ करुँ ।
इन्द्र धनुष सा बन जाता है तेरी इक अँगड़ाई में ।।

मेंहदी का रंग ख़ून हुआ है आग हुआ सिन्दूरी रंग ।
ग़म का सरगम फूट रहा है क्यों बजती शहनाई में ।।

मेरी वफ़ा औ अपनी जफ़ा का मेरे मरने पर आख़िर ।
आज हिसाब चुकाने आये हैं वो आना-पाई में ।।

यारो किससे जाकर पूछें आख़िर कैसे राज़ खुले ।
कौन निकल पाया है गिर कर इश्क़ की गहरी खाई में ।।

आज वो शायद दिल बहलाने नदी किनारे आया है ।
उसके बदन की ख़ुशबू 'मधुकर' लगती है पुरबाई में ।।

□

मैंने जिसको अपना समझा वही छुपाये ख़ंजर निकला ।
अपनी थी क़िस्मत कुछ ऐसी इश्क़ में ऐसा मंज़र[1] निकला ।।

तेरे बारे में ये क़िस्सा झूठ समझता था मैं लेकिन ।
वक़्त पड़ा तो मैंने जाना तू ही बन कर अजगर निकला ।।

मन मंदिर में तुझे बिठा कर पूजा मैंने युगों-युगों तक ।
जब भी तुझसे कुछ मांगा है तो झोली में पत्थर निकला ।।

तूने बाँकी चितवन से जो तीर चलाये मेरे ऊपर ।
मैंने जब भी उसको खोजा मेरे मन के अन्दर निकला ।।

अग्नि बिरह की तेज़ हुई तब सपनों के सब मोती पिघले ।
तुझसे प्रीति हुई कुछ ऐसी नयनों से बह सागर निकला ।।

अपनी ख़ुशियाँ सारी देकर तेरे ग़म सब मैंने लिए थे ।
तेरे बदले मैं रोता था तेरा दामन क्यों तर निकला ।।

काबा समझ कर जिसको 'मधुकर' लाख किये हैं तूने सजदे ।
जब चूमा क़दमों को उसके तो पत्थर का पैकर[2] निकला ।।

□

१. दृश्य २. मूर्ति, मुजस्सिमा

निगाहे नेक में हर पल ख़ुदा का वास होता है ।
तजुरबा जो भी करते हैं उन्हें एहसास होता है ।।

किसी ने प्राण की बाज़ी लगा दी प्रेम के पथ पर ।
किसी काफ़िर अदा के वास्ते उपहास होता है ।।

हमारी कल्पना के अक्स[1] में जो शब्द ढल जाये ।
वही अक्सर ज़माने के लिए इतिहास होता है ।।

नियम क़ुदरत का है यारो समय करवट बदलता है ।
जहाँ में राम के भी वास्ते बनवास होता है ।।

विनय के राग में जब गीत 'मधुकर' गुनगुनाता है ।
सुमन की वाटिका में उस घड़ी मधुमास होता है ।।

□

१. बिम्ब

५०

जिसने मुझको इस दुनिया में जीने का अधिकार दिया ।
उसके प्रेम में मैंने अपना तन, मन, धन सब वार दिया ।।

क्या दुनिया के संग तुमने भी अपनी नीति बदल डाली ।
फूलों के बदले में मुझको काँटो का उपहार दिया ।।

दिल वालों को सदा ग़रीबी तूने दी है ऐ मालिक ।
दिल के निर्धन निकले जिनको दौलत का अम्बार दिया ।।

वार तो अपनी ढाल पे सारे रोक लिए थे दुश्मन के ।
लेकिन मेरे यार ने मेरी पीठ पे ख़ंजर मार दिया ।।

'मधुकर' इस दुनिया का देखो कैसा है क़ानून अजब ।
उसने तुझको नफ़रत दी है जिसको तूने प्यार दिया ।।

□

वही बड़ा इन्सान यहाँ जो छोटों का सम्मान करे ।
ग़ैरों की ख़ातिर दुख झेले ख़ुशियों का बलिदान करे ।।

दुख पहुँचे जिससे औरों को काम न वो इन्सान करे ।
जीवन मेला चार दिनों का कोई भले अभिमान करे ।।

वह सपूत है भारत माँ का जो अर्पण जी-जान करे ।
वक़्त पड़े तो तन, मन, धन सब देश के हित क़ुर्बान करे ।।

देश है पहले धर्म बाद में यह चिन्तन इन्सान करे ।
इतनी सी बस सोच हमारी भारत का उत्थान करे ।।

देश है मन्दिर देश है मस्जिद देश है गिरजा-गुरुद्वारा ।
हिन्दू-मुस्लिम बन कर झगड़े यह गलती नादान करे ।।

ये तो है मालूम सभी को इस दुनिया से जाना है ।
चार दिनों के लिए तु इन्साँ क्यों ख़राब ईमान करे ।।

जाते हो तो जाओ लेकिन जल्दी लौट के घर आना ।
जीवन पथ पर आपकी ईश्वर हर मुश्किल आसान करे ।।

भाई-भाई बन कर रहना हर मज़हब सिखलाता है ।
"प्यार सजाता है गुलशन को और नफ़रत वीरान करे" ।।

बीत चुका है वर्ष पुराना नया वर्ष मंगलमय हो ।
आने वाले हर पल तेरा 'मधुकर' भी सम्मान करे ।।

□

क़तआत् एवं मुक्तक

प्यार उस दिलरुबा के साथ करो ।
बात हर इक वफ़ा के साथ करो ।
बज़्म में तुम ज़ुबाँ से ऐ 'मधुकर' ।
ज़िक्र उसका दोआ के साथ करो ।।

□

अल्लाह ने इन्सान को इन्सान बनाया ।
हिन्दू न बनाया न मुसलमान बनाया ।
दुनिया में सभी लोग रहें प्यार से मिल कर ।
इन्साँ के लिए एक ही फ़रमान बनाया ।।

□

ख़ुदा का है बशर के वास्ते फ़रमान दुनिया में ।
मुक़द्दस[1] वेद हैं इन्जील[2] है क़ुरआन दुनिया में ।
ख़ुदा की बन्दिगी के साथ हो आपस में हमदर्दी ।
किया पैदा गया है इसलिए इन्सान दुनिया में ।।

□

आदम[3] अगर न आते तो पहचानता भी कौन ।
तेरा वुजूद[4] आज यहाँ मानता भी कौन ।
होता न तेरा हुस्न अगर सबसे बेमिसाल ।
तेरी गली की ख़ाक भला छानता भी कौन ।।

□

१. पवित्र २. बाइबिल ३. पृथ्वी पर प्रथम मनुष्य का नाम हज़रत आदम अलैहसलाम ४. अस्तित्व

इन्तेहा[1] और इबतदा[2] मिल जाये ।
इश्क़ को हुस्न की अदा मिल जाये ।
शौक़े राहे तलब में ऐ 'मधुकर' ।
जाने किस मोड़ पर ख़ुदा मिल जाये ।।

□

कोई सेहरे की रौनक़ बनाया गया ।
कोई अर्थी पे लाकर चढ़ाया गया ।
देखिए अपना-अपना मुक़द्दर है ये ।
इक हँसाया गया इक रुलाया गया ।।

□

इश्क़ की बेताबियाँ तेरे बग़ैर ।
हुस्न की परछाइयाँ तेरे बग़ैर ।
हर तरफ़ तारीकियाँ[3] छायी हैं दोस्त ।
ज़ीस्त[4] की ताबानियाँ[5] तेरे बग़ैर ।।

□

उम्र भी इक सज़ा आज साबित हुई ।
सारी दुनिया ख़फ़ा आज साबित हुई ।
मौत तो अपने वादे पे आयी मगर ।
ज़िन्दगी बेवफ़ा आज साबित हुई ।।

□

१. अन्त २. प्रारम्भ ३. अंधेरे ४. जीवन ५. चमक

इश्क़ की राह में मैं कुछ तो सहूलत कर दूँ ।
आने वालों के लिए कुछ तो हिफ़ाज़त कर दूँ ।
क्यों लगाये हैं मोहब्बत पे जहाँ ने पहरे ।
दिल में आता है ज़माने से बग़ावत कर दूँ ।।

□

अब ग़मों को भुलाने कहाँ जाइये ।
दास्ताँ ये सुनाने कहाँ जाइये ।
उनको फ़ुर्सत नहीं एक पल के लिए ।
ज़ख़्म दिल के दिखाने कहाँ जाइये ।।

□

दिल के अरमान चूर रहते हैं ।
ग़म हज़ारों ख़ुशी से सहते हैं ।
मौत 'मधुकर' कली की गोद में हो ।
हम इसे ज़िन्दगानी कहते हैं ।।

□

जहाँ की तलख़ियाँ तुम मेरे दिल से यूँ मिटा देना ।
ज़रा तुम सामने आकर नक़ाब अपनी उठा देना ।
फ़क़त 'मधुकर' को जीने के लिए इतना ही काफ़ी है ।
ख़यालों में मिरे एक बार आकर मुस्कुरा देना ।।

□

दरिया न बन सका मैं समन्दर न बन सका ।
अफ़सोस वक़्त का मैं सिकन्दर न बन सका ।
जिसकी सलामती की दोआ मांगी उम्र-भर ।
मैं उस हसीन गुल का मुक़द्दर न बन सका ।।

□

वो ख़यालों में जब भी आया है ।
दिल का हर दाग़ जगमगाया है ।
ज़िन्दगी का हिसाब मत पूछो ।
कितना खोया है कितना पाया है ।।

□

लाख हैं कुल्फ़तें[1] ज़माने की ।
मेरी आदत है मुस्कुराने की ।
एक ग़म से हैं लाख ग़म 'मधुकर' ।
है यही दास्ताँ फ़साने[2] की ।।

□

ज़माने से शिकवा न कोई गिला है ।
बहारों में गुलशन न अपना खिला है ।
बहुत हमने पकड़ा उजालों का दामन ।
मगर हर जगह पर अँधेरा मिला है ।।

□

१. कष्ट २. कहानी

हम खड़े इस पार हैं और वो खड़े उस पार हैं ।
हसरतों की कश्तियाँ भी आज बिन पतवार हैं ।
हादसा साहिल पे शायद हो गया 'मधुकर' कोई ।
इसलिए दरिया के भी बिगड़े हुए अत्वार[1] हैं ।।

□

मिरी ज़िन्दगी की मोहब्बत तुम्हीं हो ।
मिरी तश्नगी[2] की हक़ीक़त तुम्हीं हो ।
तुम्हीं तो हो हासिल[3] मिरी शायरी के ।
मिरी बन्दिगी की अक़ीदत तुम्हीं हो ।।

□

इनके वादे पे ऐतबार न कर ।
मुफ़्त दिल अपना बेक़रार न कर ।
आज अपने तो कल पराये हैं ।
इन हसीनों से दोस्त प्यार न कर ।।

□

तिरे ख़यालों में मैं आज इस क़दर खोया ।
निकल पड़ा हूँ तसव्वुर[4] में आँसुओं की तरह ।
ख़ुदा ही जाने कि कल को कहाँ ठिकाना हो ।
ये ज़िन्दगी भी तो 'मधुकर' है साधुओं की तरह ।।

□

१. तेवर का बहुवचन २. प्यास ३. प्राप्ति ४. कल्पना

इक दिन तुम भी चले जाओगे मुझको ये मालूम न था ।
ग़म की दुनिया दे जाओगे मुझको ये मालूम न था ।
दिन के मंज़र रात के सपने ले तो गये थे तुम लेकिन ।
मन का चैन भी ले जाओगे मुझको ये मालूम न था ।।

□

काश तुम्हारी उल्फ़त पर अधिकार हमारा होता ।
काश तुम्हारे नयनों में भी प्यार हमारा होता ।
साथ तुम्हारे हम भी ख़ुशी से जी लेते दो घड़ियाँ ।
नाम तुम्हारे अधरों पर इक बार हमारा होता ।।

□

कुछ तो करिये बात ख़ुशी की कुछ इज़हारे ग़म करिये ।
किसी के लब पर आये तबस्सुम आँख किसी की नम करिये ।
ग़ज़लों में रंगीन तख़इयुल[1] विरह संजो कर गीतों में ।
'मधुकर' अब तो इसी बहाने बोझ ग़मों का कम करिये ।।

□

घर आँगन ख़ुशहाली होगी संकल्पों के दीप जलेंगें ।
होली, क्रिसमस, ईद, दिवाली आपस में हम गले मिलेंगें ।
प्रथम वर्ष ये नयी सदी का फूल खिलाये गुलशन-गुलशन ।
निश्चित ही अब अंधकार के दानव अपने हाथ मलेंगें ।।

□

१. कल्पना

साज़िशों[1] का पता ना लगा दोस्तो ।
आग में शह्र पूरा जला दोस्तो ।
हैं ग़रीबों के बेटे मरे किस क़दर ।
जब कभी कोई दंगा हुआ दोस्तो ।।

□

धर्मो मज़हब लड़ाने की साज़िश है ये ।
फिर से दंगा कराने की साज़िश है ये ।
कोई बैठा है पर्दे के पीछे ज़रुर ।
ख़ूनी गंगा बहाने की साज़िश है ये ।।

□

उठ रहा हर गली में धुआँ देखिए ।
हर तरफ़ जल रहे हैं मकाँ देखिए ।
राम और कृष्ण के देश में किस क़दर ।
आज रोता है अम्नो-अमाँ[2] देखिए ।।

□

है शख़्स वो ग़द्दार वफ़ादार नहीं है ।
इस देश की मिट्टी से जिसे प्यार नहीं है ।
जो मुल्क के दुश्मन से करे दोस्ती यारो ।
भारत में उसे रहने का अधिकार नहीं है ।।

१. षड़यंत्रों २. शान्ति

दाग़ दामन पे सजाने के लिए ।
गुज़रे लम्हात जगाने के लिए ।
बज़्मे हिजराँ को सजाओ 'मधुकर' ।
अश्कें ग़म आज बहाने के लिए ।।

□

दौलत है हुस्न इसकी हिफ़ाज़त किया करो ।
कलियों की तरह आप हैं बच कर रहा करो ।
सहने चमन में लाख हैं 'मधुकर' तलाश में ।
अब चाँदनी में आप ख़ुदारा[1] छुपा करो ।।

□

मज़ा ज़िन्दगी का नज़ारों से पूछो ।
मिरे हिज्र[2] का हाल तारों से पूछो ।
गुज़रती है कैसी समन[3] और गुल[4] पर ।
ख़िज़ाओं[5] में 'मधुकर' बहारों से पूछो ।।

□

गिरेबाँ चाक था हम सी न पाये ।
मय-ए-उल्फ़त भी यारो पी न पाये ।
फ़साना अपना क्या 'मधुकर' सुनाते ।
जहाँ में चार दिन भी जी न पाये ।।

□

१. ईश्वर के लिए २. बिरह ३. एक फूल का नाम
४. गुलाब ५. पतझर

कोशिश करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता ।
दुनिया की भँवर में वो कभी खो नहीं सकता ।
'मधुकर' जो अपने आपसे मायूस हो गया ।
वो बोझ ज़िन्दगी का कभी ढो नहीं सकता ।।

□

शासन चलाओ इस तरह सबको सुकूँ मिले ।
रोटी सभी को दोस्तो दो जून चाहिए ।
मुफ़लिस भी जी सके यहाँ ऐसा निज़ाम[1] हो ।
अपने वतन में ऐसा अब क़ानून चाहिए ।।

□

नौजवाँ अज़्म[2] है तारीख़[3] बदलने के लिए ।
वक़्त की साज़िशें[4] चुटकी से मसल डालेंगे ।
मुफ़लिसों को कभी पहुँचा न सके जो राहत ।
ऐसी सरकार को पल भर में बदल डालेंगे ।।

□

क़ैद मुट्ठी में अपनी अँधेरा करो ।
चाँद-तारों पे अपना बसेरा करो ।
रोशनी इल्म[5] की जगमगाने लगे ।
ऐसा गुलशन में अपने सवेरा करो ।।

□

१. प्रबन्ध, व्यवस्था २. इरादा ३. इतिहास ४. षडयन्त्र
५. ज्ञान, विद्या

खूँ दिया है चमन के लिए ।
मिट गये हैं वतन के लिए ।
दिल में रौशन शमा कीजिए ।
अम्न[1] की अन्जुमन[2] के लिए ।।

□

मान परचम[3] का अपने बढ़ा देंगे हम ।
हौसला दुश्मनों का मिटा देंगे हम ।
देश को गर ज़रुरत पड़ी जान की ।
अपने सर सरहदों पर कटा देंगे हम ।।

□

खूँ के क़तरे जहाँ टपकते हैं ।
रंग गुलनार[4] होगा पानी का ।
ज़िन्दगी मर के जो भी दे जाये ।
रंग वो होगा ज़िन्दगानी का ।।

□

गरानी ने सबका निकाला दिवाला ।
ग़रीबों से छीना गया है निवाला ।
सभी कोठियाँ जगमगाती हैं लेकिन ।
कहाँ पर है मुफ़लिस[5] के घर में उजाला ।।

□

१. शान्ति २. महफ़िल, सभा ३. ध्वज ४. रंगीन, अनार की तरह ५. निर्धन

बेटी के हाथ पीले कराने के वास्ते ।
बाबुल गये विदेश कमाने के वास्ते ।
लेकिन फ़ज़ा है आज बहुत मुल्क की ख़राब ।
लाले पड़े हैं जान बचाने के वास्ते ।।

□

हर तरफ़ चंगेज़ियत है देस में ।
आदमी है जानवर के भेस में ।
आज-कल 'मधुकर' हमें लगता है ये ।
आ गये हैं हम किसी परदेस में ।।

□

सत्य ही जिनका निष्कर्ष है ।
उनके मुखड़े पे ही हर्ष है ।
क़ोरा काग़ज़ ही 'मधुकर' नहीं ।
ज़िन्दगी एक संघर्ष है ।।

□

तुझको तख़्ते हुकूमत मुबारक रहे ।
मुतमइन[1] अपनी दुनिया फक़ीरी में है ।
अहले दौलत[2] को इसका पता ही नहीं ।
जो मज़ा दोस्तो इस ग़रीबी में है ।।

□

१. संतुष्ट २. धनवान

झूठे वादों पे तेरे जीता हूँ ।
दिल के दामन को रोज़ सीता हूँ ।
सुब्ह तक होश ना रहे 'मधुकर' ।
इतनी ज़्यादा शराब पीता हूँ ।।

□

मयकश की पहचान अभी ।
क्या जाने नादान अभी ।
मयख़ाने की ख़ूबी से ।
वाइज़[1] है अन्जान अभी ।।

□

अभी दौर मय का चला भी नहीं है ।
अभी जाम मैंने छुआ भी नहीं है ।
भरी बज़्म में आहोज़ारी[2] ये कैसी ।
अभी ज़िक्र उनका किया भी नहीं है ।।

□

इश्क़ के घर में सवेरा न हुआ ।
हुस्न के घर में कभी रात नहीं ।
उम्र भर याद रहेगी ये घड़ी ।
सामने वो हैं मुलाक़ात नहीं ।।

□

१. धर्म उपदेशक २. चीख-पुकार

झूठे वादों पे जी रहा हूँ मैं ।
फिर ग़मे अश्क पी रहा हूँ मैं ।
चाक 'मधुकर' किया मुक़द्दर ने ।
फिर गिरेबान सी रहा हूँ मैं ।।

□

है किसी को ख़िज़ा[1] ने लूट लिया ।
है बहारॉं[2] किसी शजर के लिए ।
वस्ल[3] की शाम है किसी का नसीब ।
कोई रोता है इक नज़र के लिए ।।

□

अब हमको पुकारा न करे कोई ।
फिर ज़िक्र हमारा न करे कोई ।
सोये हुए ज़ख़्मों को जगाने की ।
तकलीफ़ गवारा न करे कोई ।।

□

आ रहे हैं हमारी अयादत[4] को वो ।
मौत तुझको भी शायद ठहरना पड़े ।
क्या अजब है कि उस हुस्न को देखकर ।
आज ऐ मौत तुझको भी मरना पड़े ।।

□

१. पतझर २. बसंत ३. मिलन ४. रोगी का हाल पूछना

ये न पूछो कि कैसे जीता हूँ ।
अपने अश्कों को रोज़ पीता हूँ ।
चाक मुद्दत से ये गिरेबाँ है ।
रफ़्ता-रफ़्ता[1] इसी को सीता हूँ ।।

□

दोस्त का क़ौलो इक़रार झूटा हुआ ।
प्यार मुझको मिला वह भी टूटा हुआ ।
कारसाज़ी[2] ये ख़ुद मेरे कातिब[3] की है ।
इक मुक़द्दर मिला वह भी फूटा हुआ ।।

□

रिश्ते यहाँ हैं बनते बिगड़ते नसीब से ।
हम दूर हो गये हैं किसी के क़रीब से ।
इतनी कहाँ नसीब थी ताक़त रक़ीब[4] को ।
'मधुकर' जुदा करे तुझे तेरे हबीब[5] से ।।

□

सबको लगी है धुन यहाँ फ़िक्रे मुआश[6] की ।
तनहा निकल पड़ा हूँ मैं तेरी तलाश में ।
दुनिया की फ़िक्र इश्के बुताँ[7] जामो मयकदा ।
सारे जहाँ के दर्द हैं मेरी तलाश में ।।

□

१. धीरे-धीरे २. करतूत ३. लिखने वाला अर्थात् ईश्वर
४. प्रतिद्वन्दी ५. दोस्त ६. रोज़ी की तलाश ७. बुतों से प्रेम

मुतफ़र्रिक अश्आर

(फुटकर शेअ्र)

जीने की आरज़ू है न मरने की तमन्ना ।
मेरा वुजूद[1] भी किसी पत्थर की तरह है ।।

दिल में हुजूमे दर्द है दामन में अश्के ग़म ।
तनहा निकल पड़ा हूँ इसी कारवाँ के साथ ।।

आइने में तुम अपने इस क़दर न इतराओ ।
आपसे हसीं लाखों इस नज़र ने देखे हैं ।।

कैसा इन्साफ़ है मेरे मालिक तिरा ।
ज़िन्दगी-ज़िन्दगी को तरसती रही ।।

एक दरिया की तरह बहता है इश्क़ ।
कैसे-कैसे इम्तहाँ सहता है इश्क़ ।।

आँखें खुली हैं जैसे किसी की तलाश है ।
किस बदनसीब चाहने वाले की लाश है ।।

मरुँगा तिरे इश्क़ में आज जल कर ।
मिरी याद आये तुझे इस बहाने ।।

लाख ग़म दिल पे उठाने के लिए ।
कौन जीता है ज़माने के लिए ।।

किसी के इश्क़ में जलता रहा हूँ उम्र भर वाइज़[2] ।।
मुबारक हो उन्हें जन्नत जहन्नुम से जिन्हें डर है ।।

क़त्ल किसने किया पायी किसने सज़ा ।
यूँ तो शाहिद[3] सभी हैं यहाँ देखिए ।।

१. अस्तित्व २. धर्म उपदेशक ३. गवाह

रोज़ आयेंगी गर इस तरह आंधियाँ ।
हश्र क्या होगा गुलशन का ऐ बाग़बाँ ।।

तुझसे तो सिर्फ़ इतनी शिकायत है ऐ ख़ुदा ।
कहने को ज़िन्दगी है मगर ज़िन्दगी नहीं ।।

तेरे एहसान नहीं भूलूँगा ।।
क्यों कि एहसान फ़रामोश नहीं ।।

नहीं हमको आसाइशों[1] की ज़रुरत ।
ग़मे ज़िन्दगी में मज़ा आ रहा है ।।

चमकती है बिजली हैं बादल बरसते ।
मिलन के लिए फिर भी दो दिल तरसते ।।

हज़ारों आशिक़ों को क़त्ल करते हैं निगाहों से ।
सितम है उनपे कोई जुर्म भी आयद[2] नहीं होता ।।

बुतों के सामने मैं इसलिए ख़ामोश रहता हूँ ।
सुना है बुत निगाहों की ज़ुबाँ से बात करते हैं ।।

जो है बदनाम पहले से वो अब बदनाम क्या होगा ।
मिरे ऊपर तुम्हारे प्यार का इल्ज़ाम क्या होगा ।।

काफ़िर अदा न हुस्ने ग़ज़ालाँ के सामने ।
सर को झुकाऊँ क्या किसी इन्साँ के सामने ।।

जब हसरतें हुदूद[3] से बाहर निकल गयीं ।
राहों को इन्तज़ार की घड़ियाँ निगल गयीं ।।

१. सुख, सुविधाओं २. लागू ३. हदें, सीमाओं

जिनकी परवाज़[1] यारो बुलन्दी पे थी ।
फँस गये ख़ुद ब ख़ुद जाल में देखिए ।।

बावफ़ा मौत है बेवफ़ा ज़िन्दगी ।
रास आयी है किसको सदा ज़िन्दगी ।।

देखता हूँ जिधर झूठ का राज है ।
तेरे हाथों में यारब[2] मिरी लाज है ।।

फूल से चेहरे को आँखों में बसा लेता हूँ ।
तश्नगी[3] क़तरा-ए-शबनम से बुझा लेता हूँ ।।

मेरे दिलबर के हाथ नाज़ुक हैं ।
कैसे दो फूल क़ब्र पे लाता ।।

तेरी उल्फ़त का ये इनआम मिला है मुझको ।
ख़ुश्क होठों पे तिरा नाम मिला है मुझको ।।

दोस्त जब जब भी ज़माने ने सताया मुझको ।
मेरी आँखों में तिरा नक़्श[4] उभर आया है ।।

इल्ज़ाम उसने आप ही सर पर लगा लिया ।
मेरी ज़रा सी बात पे ख़ंजर उठा लिया ।।

मिटा दें चलो हर्फ़े नफ़रत मिटा दें ।
दिलों में मोहब्बत की शम्मा जला दें ।।

जिसके मुखड़े से मन को उजाला मिला ।
चाँद रौशन रहे वो क़यामत तलक ।।

१. उड़ान २. हे ईश्वर ३. प्यास ४. रेखा चित्र

मुझपे इल्ज़ाम इलाही[1] है बहक जाने का ।
तूने इन्सान बनाया है फ़रिश्ता तो नहीं ।।

गुज़रा हूँ मयकदे की गली से ये जुर्म है ।
मयकश समझ के आपने बदनाम कर दिया ।।

मयख़ाने के रिन्दों में अब शामिल मेरा नाम नहीं ।
मेरी क़िस्मत में ऐ साक़ी कोई भी अब जाम नहीं ।।

ज़रा ठहर जा शामे ग़म इक जाम बचा है और सही ।
अभी कहाँ हैं आँखें नम एक जाम बचा है और सही ।।

वाइज़[2] जो तेरे दिल में नहीं है ख़ुदा का ख़ौफ़ ।
हम रिन्द[3] तुझसे अच्छे कि ख़ौफ़े ख़ुदा तो है ।।

किसने ज़ुल्फ़ें बिखेरी हैं शाम हो गयी ।
मयकशी जल्द ही आज आम हो गयी ।।

मयकदे की हुस्नेरा[4] साग़र में बलखाने लगी ।
प्यास होठों पर मचल कर दिल को तड़पाने लगी ।।

नयी ज़िन्दगी मिलेगी तुम्हें हर क़दम पे 'मधुकर' ।
चलो मयकदे में चल कर ग़मे ज़िन्दगी भुला दें ।।

लौट जाये जो प्यासा तो रुसवाई है ।
जाम है मयकदे में सभी के लिए ।।

मय छलक जाये आँखों से उनकी अगर ।
सारा आलम ही मदहोश हो जायेगा ।।

१. हे ईश्वर २. धर्मोपदेशक ३. शराबी ४. ख़ूबसूरत

आज दिल बेक़रार है यारो ।
उसका फिर इन्तज़ार है यारो ।।

मेरे मालिक मुझे तू ख़ुदाई न दे ।
मेरे महबूब से पर जुदाई न दे ।।

जिसने सूरत बनायी मिरे यार की ।
नाम की उसकी दुनिया परस्तार[1] है ।।

काँटों से कहाँ ज़ख़्म तो फूलों से मिले हैं ।
ग़म जितने मिले हैं मुझे अपनों से मिले हैं ।।

नज़रें बिछाये बैठे हैं राहों में आज-कल ।
शायद उन्हें तलाश किसी हम सफ़र की है ।।

ग़ज़ब कर दिया आइने ने सहर[2] को ।
नज़र लग गयी आज उनकी नज़र को ।।

उसने चिलमन से झाँका है जब चाँद को ।
ईद अपनी सरे शाम ही हो गयी ।।

देखा है चाँद ईद का क्यों ना गुमान हो ।
उसकी कहीं न इस तरह अबरु[3] कमान[4] हो ।।

अश्के ग़मे हयात[5] अभी पी रहा हूँ मैं ।
इक बुत की जुस्तुजू[6] में अभी जी रहा हूँ मैं ।।

आपके अब तो दर्शन हैं दुर्लभ मगर ।
फिर भी तस्वीर रहती है दिल मे मिरे ।।

१. उपासक २. सुबह ३. भौं, भृकुटि ४. धनुष ५. जीवन
६. तलाश

याद उसकी मुझे रोज़ आती रही ।
इसलिए ज़िन्दगी मुस्कुराती रही ।।

जब से देखा है तिरी तस्वीर को ।
सुर्ख़रु[1] तब से मिरी तहरीर[2] है ।।

आपकी मेरी आँखों में तस्वीर है ।
आइने से न अब बेरुख़ी कीजिए ।।

ये रोज़ देखता हूँ तमन्ना के शह्र में ।
नीलाम हो रही है सरे आम ज़िन्दगी ।।

एक मुद्दत हुई नींद आयी नहीं ।
इसलिए ज़िन्दगी मुस्कुरायी नहीं ।।

कुछ तो मेरे ख़्वाबों की ताबीर[3] बना ।
उसके दिल में मेरी तू तस्वीर बना ।।

हुस्न जब नज़्दे[4] आसमाँ होगा ।
चाँद-तारों का इम्तहाँ होगा ।।

बज़्म में आ गये बेवफ़ा देखिए ।
इन हसीनों की ज़ालिम अदा देखिए ।।

चेहरे पे लाख वक़्त का गर्दो-ग़ुबार है ।
दिल फिर भी तेरे हुस्न का आईनादार[5] है ।।

उनको कैसे ख़त लिक्खूँ अल्फ़ाज़ नहीं मिलते ।
दिल की वादी में मुद्दत से फूल नहीं खिलते ।।

१. कामयाब २. लेख ३. स्वप्न फल ४. निकट ५. दर्पन गृह

झूठी दुनिया का ऐतबार[1] ही क्या ।
कल के दिन ये रही रही न रही ।।

गर अबके आप जश्ने चिरागाँ[2] मनाइये ।
तो मुफ़लिसों के घर में भी दीपक जलाइये ।।

कश्ती के नाख़ुदा[3] ने मौजों से लड़ते-लड़ते ।
ख़ुद को डुबो दिया है साहिल की जुस्तुजू[4] में ।।

ख़ुदा के घर लकीरों से हरेक तक़दीर बनती है ।
मुसव्विर[5] की लकीरों से हसीं तस्वीर बनती है ।।

ख़ुदा का पता तो नहीं है मगर ।
ख़ुदा ज़र्रे-ज़र्रे में है जलवागर ।।

किया क़त्ल जिसने था बाज़ार में ।
अदालत ने उसको बरी कर दिया ।।

उम्र-भर जो प्यार का सबको सबक़ देता रहा ।
दिल में उसके बुग्ज़ो नफ़रत[6] के सिवा कुछ भी न था ।।

सिंगार करके वो आये हैं आज महफ़िल में ।
क़ज़ा से पहले किसी को न मौत आ जाये ।।

सारे चिराग़ बुझ गये जब भी अंधेरी रात में ।
ज़ेहन में शक्ल बस गयी वो आफ़ताब[7] की तरह ।।

नाव है पतवार बिन मजधार में तो क्या हुआ ।
इक रवानी प्यार की आकर बहा ले जायेगी ।।

१. विश्वास २. दीपावली ३. नाविक ४. तलाश ५. चित्रकार
६. ईर्ष्या-द्वैष ७. सूरज

मुलव्विस[1] अदब में अदाकारियाँ हैं ।
इसे शायरी का ज़माना न कहिए ।।

तुझे फ़िक्र[2] में तराशा हुआ इक सनम कहूँगा ।
मिरी शायरी ने तुझको यही नाम दे दिया है ।।

लुट न जाये कहीं प्यार का क़ाफ़िला ।
रहबरों का भरोसा भी क्या कीजिए ।।

निकला हूँ घर से जब भी गुलों की तलाश में ।
काँटों में मेरा दोस्तो दामन उलझ गया ।।

देख कर महसूस होता है तिरी तस्वीर को ।
महवे[3] हो जैसे ख़याले यार में कोई ग़ज़ल ।।

सुन लिया उस ज़ुबाँ को है मैंने अभी ।
जो ज़ुबाँ एक मुद्दत से ख़ामोश थी ।।

ग़म के क़िस्से लबों पर जब आने लगे ।
ज़ख़्म दिल के मिरे मुस्कुराने लगे ।।

आपको हर ख़ुशी ख़ुदा बख़्शे ।
दोस्तो साले नव मुबारक हो ।।

आइये बैठिये तो मुलाक़ात हो ।
क़िस्सा-ए-इश्क़ की फिर शुरुआत हो ।।

मैंने तुम सा न हसीं कोई सुख़नवर[4] देखा ।
आज कूज़े में भरा हमने समन्दर देखा ।।

१. मिला हुआ २. चिन्तन ३. खो जाना ४. शायर

बिजलियाँ रोज़ गिराना है तुम्हारी आदत ।
अपनी फ़ितरत[1] में है तामीर नशेमन करना ।।

इतना नाज़ुक बदन मेरा महबूब है ।
मेरे भेजे हुए फूल भी बार[2] हैं ।।

याद वो और ज़्यादा ही आने लगे ।
मेरे सर की क़सम जब से खाने लगे ।।

जब से देखा है उस हुस्न को ।
ज़िन्दगी ख़ुद ग़ज़ल बन गयी ।।

बे पर्दा बज़्म में कभी आया न कीजिए ।
मुझ पर सितम ये आप ख़ुदारा न कीजिए ।।

आइना शहर का ये कहता है ।
तुमसे ज़्यादा कोई हसीन नहीं ।।

चाँद गर बाम[3] पर नज़र आता ।
ईद अपनी भी हो गयी होती ।।

दिल में तड़प के सारी तमन्नायें मर गयीं ।
लम्हों के इन्तज़ार में सदियाँ गुज़र गयीं ।।

बादल के झरोकों से जब चाँद निकलता है ।
एहसास के सीने में हर दर्द उभरता है ।।

ग़श खा के गिर न जाये कहीं आइना हुज़ूर ।
रुख़ से उठाइये नहीं हरगिज़ नक़ाब को ।।

१. आदत २. बोझ ३. छत

हादसा फिर वही हुआ होगा ।
घर कोई फूस का जला होगा ।।

दीपक जला के जश्ने दिवाली मनाइये ।
लेकिन किसी ग़रीब का घर ना जलाइये ।।

रूह[1] आज़ाद है हर चमन के लिए ।
जिस्म मोहताज गोर[2]-ओ-कफ़न[3] के लिए ।।

दोस्त हिन्दू न मुसलमान हूँ मैं ।
सच अगर पूछो तो इन्सान हूँ मैं ।।

शेअ्र कहने का भी एक अन्दाज़ हो ।
फ़िक्र[4] की राह में कुछ तो परवाज़ हो ।।

जुनूने इश्क़ में जब कारवाँ गुज़रता है ।
कहाँ किसी का कोई इन्तज़ार करता है ।।

गो लाख तु परदे में छुपा बैठा है लेकिन ।
इस दिल के नगीने में तुझे देख रहा हूँ ।।

कौन समझेगा हमारे शेअ्र की गहराइयाँ ।
फ़न हमारा सब किताबों में धरा रह जायेगा ।।

ख़ामोश हूँ लबों पे कोई दास्ताँ नहीं ।
तनहा निकल पड़ा हूँ मैं अपनी तलाश में ।।

उठो कि मुल्क की तामीरे नव करें मिल कर ।
परिन्द[5] ले के नये साल का पयाम आये ।।

१. आत्मा २. कब्र ३. मृत चैल (अंतिम संस्कार) ४. चिन्तन
५. पक्षी

तेरी ज़ुल्फ़ों की स्याही से मौसम गीले हो जाते हैं ।
तेरे नयनों की रंगत से शब्द नशीले हो जाते हैं ।।

जीवन कितना मचल रहा है सड़कों और फुटपाथों पर ।
देखो जाकर यक़ीं न आये तुमको मेरी बातों पर ।।

बुलबुलों पर सहने गुलशन में सितम है आज-कल ।
नरगिसो, लालाओ गुल की आँख नम है आज-कल ।।

किस तरह से दिल पर होती है तुम दोस्त हुकूमत क्या जानो ।
हम अहले मोहब्बत की बातें तुम अहले सियासत क्या जानो ।।

होती है इनायत की जिस पर भी नज़र उसकी ।
तक़दीर बदलने में कुछ देर नहीं लगती ।।

□

नाम	: •	श्रीराम गुप्त
उपनाम	: •	मधुकर शैदाई
जन्म तिथि	: •	पाँच मार्च उन्नीस सौ इक्यावन
पिता	: •	स्व० श्री प्यारे लाल गुप्त
जन्म स्थान	: •	गोला गोकर्णनाथ जनपद, खीरी उ.प्र.
प्रकाशित कृतियाँ	: •	आवाज़ हिन्दुस्तान की
	: •	ग़ज़ल के आँचल पर
	: •	अधूरी ग़ज़ल
	: •	दर्पण बोल उठा
अप्रकाशित कृतिया	: •	ग़ज़ल संग्रह
	: •	गीत संग्रह
	: •	दोहा संग्रह
प्रसारण	: •	समय समय पर आकाशवाणी लखनऊ से रचनाओं का प्रसारण
उपलब्धियाँ	: •	सन् २००३ में 'अधूरी ग़ज़ल' – सर्वाधिक लम्बी ग़ज़ल (Longest ghazal) का राष्ट्रीय कीर्तिमान "लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स" में स्थापित।
	: •	स्वामी विवेकानन्द बाल उद्यान द्वारा "विवेक श्री" की मानद उपाधि से सम्मानित तथा विभिन्न संस्थाओं से अभिनन्दित।
	: •	विश्व कीर्तिमान हेतु 'अधूरी ग़ज़ल' – सर्वाधिक लम्बी ग़ज़ल (Longest ghazal) "गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स" में विचाराधीन।
	: •	प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं एवं काव्य–संकलनों में रचनायें प्रकाशित।
	: •	कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों में काव्य पाठ तथा संयोजन।

मुद्रक – ऑफ़सेट इण्डिया, मशकगंज, लखनऊ, फोन: 2201605